॥श्रीमते रामानुजाय नमः॥

श्री राम रूप सुधा माधुरी

श्री मानस सुमन वाटिका

श्री मानस सुमन वाटिका

संकलन : **बेनीप्रसाद जाजोदिया**

अक्षर छपाई : 'शिवशक्ति' मुद्रण, खरकाडीपुरा, अमरावती.
ऑफसेट छपाई : 'कलाकेन्द्र', जयस्तंभ चौक, अमरावती.

श्री गणेश–स्तुति

(राग बिलावल)

गाइये गनपति जगवन्दन ।
संकर–सुवन–भवानी–नन्दन ।।१।।
सिद्धि–सदन गजवदन विनायक ।
कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक ।।२।।
मोदक–प्रिय मुद मंगल दाता ।
विद्या–वारिधि, बुद्धि बिधाता ।।३।।
मांगत तुलसिदास कर जोरे ।
वसहिं रामसिय मानस मोरे ।।४।।

रामधुन

रघुपति राघव राजाराम,
पतित पावन सीताराम ।
जय रघुनन्दन जय सिया राम,
जानकी वल्लभ सीताराम ।।
अवध बिहारी सिया राम,
भजमन प्यारे सीताराम ।
सीताराम सीताराम,
सीताराम सीताराम ।।

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना । कर बिनु करम करई विधि नाना ।।
आनन रहित सकल रस भोगी । बिनु वाणी बकता बड़ जोगी ।।
तन बिनु परस नयन बिनु देखा । ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेशा ।।
असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ न बरनी ।।

।। श्री रामः शरणं मम ।।

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ।
राजाराम राजाराम राजाराम राजाराम ।। टेर ।।

यह नाम बनाया प्रथम पूज्य श्रीगणपतीजीको पल में ।
मिल गया यही अवलंब नाम शबरी को जगल में ।।
लाखों का बेडा पार किया पहुँचाया प्रभुके धाम ।।१।। सीताराम...

बजरंग बली के बल में इनकी महिमा भारी है ।
ध्रुव व बिभीषण को भी यह बूटी प्यारी है ।।
प्रहलाद इसी को जपते थे नीसिवासर आठौं याम ।।२।। सीताराम...

ब्रह्मा के चारों वेदों से यह नाम उचरता है ।
शिवजी के मानस मन्दिर में दीपक सा जलता है ।।
नारदजी की वीणा पर बजता है सुन्दर नाम ।।३।। सीताराम...

क्या कहें अनारी मोदलता इस से क्या होता है ।
हम क्या बतलावें प्रेमीजन इस में क्या टोना है ।।
जप कर देखो श्रद्धा से होवेगा पूरा काम ।।४।। सीताराम...

मिलता है सच्चा सुख केवल श्री राम तुम्हारे चरणों में ।
यह बिनती है पल पल छिन छिन रहे ध्यान चरणों में ।। टेर ।।

चाहे बेरी सब संसार बने । चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।।
चाहे मौत गले का हार बने । रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।१।। मिलता...

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो । चाहे कांटों पर मुझे चलना हो ।।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो । रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।२।। मिलता...

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो । चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।।
पर मन नही डगमग मेरा हो । रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।३।। मिलता...

जिव्हा पर तेरा नाम रहे । तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
तेरी याद में आठों याम रहे । रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।४।। मिलता...

२६

॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥

राग गौरी

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरन-भव भय दारुनं ।
नव कंज लोचन, कंज मुख, कर कंज, पद कंजारुनं ॥१॥
कंदर्प अगनित अमित छबि, नव नील नीरद सुन्दरं ।
पट पीत मानहु तडित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरं ॥२॥
भजु दीन बन्धु दिनेस दानव-दैत्य बंस निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोसलचंद दसरथ नन्दनं ॥३॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभुषनं ।
आजानु भुज सरचापधर, संग्राम-जित खरदुषनं ॥४॥
इति बदति तुलसीदास संकर सेष-मुनि-मन रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास करु, कामादि खल दल-गंजनं ॥५॥

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ॥१॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ।
मों सम आरत नहिं आरति हर तोसो ॥२॥
ब्रह्म तू हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात, मात, सखा, गुरु तू सब बिधि हितु मेरो ॥३॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु ! चरन सरन पावै ॥४॥

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।
काको नाम पतित-पावन जग, केहि अति दीन पियारे ॥१॥
कौने देव बराइ बिरद-हित, हठि हठि अधम उधारे ।
खग, मृग, व्याध, पखान, विटप जड़ जवन कवन सुर तारे ॥२॥
देव, दनुज मुनि, नाग, मनुज, सब माया बिबस बिचारे ।
तिन के हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥३॥

गोस्वामी तुलसीदासजी

पन्द्रह सो नवासी की बात है, भादो सुदी तेरह की भली रात है ।
आत्माराम दुबे के यहां जन्म लिया, विधाताने अद्‌भुत स्वरुप दिया ।।१।।

रत्ना से ज्ञान का प्रकाश मिला,
अस्थि चर्म–मय–देह मोह त्याग दिया ।।
विश्व को असार जान, कर्म को प्रधानमान,
सत्य एक राम जगती में है महान ।।२।।

एक भोगी ने कैसा रूप लिया, त्याग विषय भोग का अनूप किया ।
ज्ञान लिया, ध्यान किया, जपकिया, तुलसी ने कैसा कठिन तप किया ।।३।।

संत बना, साधु बना, देव बना,
सत्य रूप, सत्य, सत्यमेव बना ।
चिराग सा प्रकाश जग को दे रहा,
महात्मा, महामना, महा, अहा ।।४।।

राख था भभूत तुलसीदास बना, विश्व की विभूति तुलसीदास बना ।
ईश्वर ने देश को कृपार्थ किया, उन्हें जन्म लोक हितार्थ दिया ।।५।।

कैसा रचा ? उसने रामचरित मानस,
राम नाम है गूंज रहा, नगर और डगर पर ।
हिमालय का आव्हान है 'राम राम'
गंगा की लहरों का आव्हान है सियाराम ।।६।।

गूंज उठे, धरणी कहे राम राम, राम अनल, राम मलय, राम व्योम ।
राम जगत राम ब्रह्मा, राम निराकार ॐ, रामकृष्ण, राम शुभ, राम रमा व्योमसोम ।।७।।

राम ही है सार जगत एक सत्य धार मान,
और सब असार जगत है मन तू ले पहिचान ।
अस्सी घाट गंगतीर देहत्याग सत्यवीर,
श्रावण शुक्ल शनीवार, स्वर्ग गया वह सिधार ।।८।।

॥ श्री राम ॥

॥ जय राम, जय जय राम ॥

राम नाम मनि दीप धरू जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहर हु जो चाहसी उजियार ॥
रामनाम रति, राम नाम गति, राम नाम विस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुशल दुहुँ दिसि तुलसीदास॥
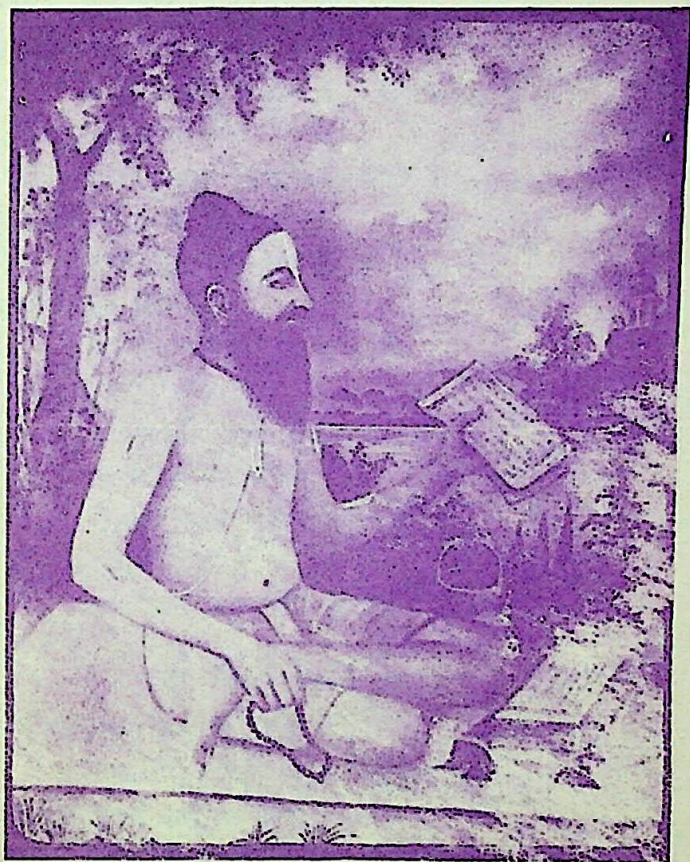
बाल्मीकजी ने रामायण में लिखी आदर्श राम की कथा।
राम कथा अनेक, देश देश की व समाज की अनुसार प्रथा॥
वेद पुराण व राम कथाओं का तुलसी ने किया मंथन–
समयानुसार प्रगटा श्रीरामचरित मानस अमृत यथा तथा॥

।। श्री रामायणजी की आरती ।।

आरती श्री रामायणजी की ।
कीरति कलित ललित सिय पी की ।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ।
बालमीक बिग्यान बिसारद ।।
सुक सनकादि सेष अरु सारद ।
बरनि पवनसुत कीरति नी की ।।१।।
गावत वेद पुरान अष्टदस ।
छओं सास्त्र सब ग्रंथन को रस ।।
मुनि जन धन संतन को सरबस ।
सार अंस संमत सब ही की ।।२।।
गावत संतत संभु भवानी ।
अरु घट संभव मुनि विग्यानी ।।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी ।
कागभुसुंडि गरुड के ही की ।।३।।
कलि मल हरनि विषय रस फीकी ।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।।
दलन रोग भव मूरि अमी की ।
तात मात सब विधि तुलसी की ।।४।।

।। मंगल ध्वनि ।।

मंगल भवन अमंगल हारी ।
उमा सहित जेहि जपत त्रिपुरारीं ।।१।।
मंगल भवन अमंगल हारी ।
द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी ।।२।।
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी ।
हरषि सुधा सम गिरा उचारी ।।३।।
धन्य धन्य गिरि राजकुमारी ।
तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ।४।।

भक्त शिरोमणी श्री हनुमान

१

जय कपीश, जय जय श्री कपीश, जय जय श्री हनुमंता,
श्री रघुवर के हो तुम परम भक्त–हो सकल गुणवंता ।
अंजना है माता तुम्हारी, शीवजी के हो अवतार,
पवन देव के तुम पुत्र हो, नमन करूं मैं बारं बार ।।

२

उछले मां की गोद से, मुख में रख लिया उगता सूरज,
राहू केतू आये हिमायती, राहू को लिया दबोच ।
केतू की पुकार, आया रावण हुवा मल्ल युद्ध,
रावण ने पाया जीवन, श्री पुलस्त्य तक थी उस की पोंच ।।

३

अवलोकन कर परिस्थिती, सब देवताओंने की मंत्रणा,
इन्द्र ने मारा वज्र, टूटी हनू, लल्ला बेहोश वेदना ।
कूपित हो–रोक दी वायू गति, मचा विश्व में हाहाकार,
पवन को प्रसन्न करने, सब देवों ने दिये उपहार ।।

४

निज शस्त्रों से किया अभय, बनाया बलशाली व महान,
ज्ञानियों में हो अग्रगण्य, सूरज ने दिया विद्या दान ।
बने नटखट, ऋषियों के भगवान डुबोने पर मिला शाप–
भूले बल बुद्धि, स्मरण कराने पर होता है भान ।।

५

ऋषि शृंग ने कराया पुत्रेष्ठी यज्ञ राजा दशरथ को,
प्रसन्न हो यज्ञ देवता प्रगटे–दिया हवि चरु राजा को ।
कौशल्या की दी आधी हवि, चील ले उडी सुमित्रा का भाग–
डाल दिया द्रोण अंजना सन्मुख, प्रसन्न चित्त ग्रहण किया प्रसादको ।।

६

सुन पृथिवी की पुकार, प्रभुजी ने लिया मनुज अवतार,
सब देव प्रगटे वानर व ऋक्ष रुप, करने ब्रह्मा का वर साकार।
शिव संग हनुमान पहुँचे अयोध्या, प्रभु का करने सेवा सत्कार—
फिर आये सुग्रीव समीप, सचिव बन किया इंतजार ।।

७

रघुवर को हुवा बनवास, चोदहवें बरस सीता हरण,
सुग्रीव से मित्रता कराई, सीता खोज का किया वरण।
अंगद के नैतृत्व पहुँचे समुद्र तट, किया सुमुद्र उल्लंघन—
दी मुद्रिका, उजाडी अशोक वाटिका, किया लंक दहन ।।

८

आये ले सिय सन्देश, चली सेना लंक विजय हेतु,
पहुँचे समुद्र तट, आया विभीषण, बाँधा समुद्र पर सेतु।
डेरा डाल दिया त्रिकूट पर्वत, राघव ने भंग की रावण की सभा—
दूत बन अंगद पहुँचे, रोप दिया पग रावण की सभा ।।

९

लक्षमण को लगी शक्ति, ला संजीवनी बूटी जिलाया,
ले गया राम लक्ष्मण पाताल, फन्द अहिरावण छुड़ाया।
रघुवर के हो खास मंत्री, लंक विजय में हाथ बटाया—
पूरन कर दो काम, राम मिलन के हो अवलम्ब हमारा ।।

१०

तोड़ फोड़ फैंक दी माला, सीताराम दरस नहीं पाये,
निज हृदय चीर, युगल छबि श्रीराम के दरशन कराये।
मांग का सिंदुर है सुहाग चिन्ह, करता पति की आयू वृद्धि,—
सच्चे पति हैं श्री राम, अंग अंग तेल सिंदुर रमाये ।।

११

राज्याभिषेक के एक वर्ष बाद सबको दी बिदाई,
दुबक गये सिंहासन नीचे, असह्य थी प्रभु की जुदाई ।
ढूंढा हनुमान को–किया परामर्श सुग्रीव से–
हुई आज्ञा–रहो अयोध्या, रम जावो श्रीराम सेवकाई ।।

१२

हनुमान ने हम सब को किया वंचित प्रभु सेवा के घाट,
सुबह से शाम तक की सेवाएं-आपस में ली बांट ।
रघुपति से मिला अनुमोदन-हनुमान ने कार्यक्रम देखा–
कहा–चुटकी बजाऊं उबासी आने पर–मुझे नहीं है आंट ।।

१३

राजा की उबाली है देश घातक, मन में बिचारते हुए,
सेवामें पर सदा तत्पर – थे प्रभु का मुख निहारते हुए ।
अर्ध रात्रि, माताजी की आज्ञा – प्रभु को शयन करने दो–
गये एकांत में राम राम जपते – निज को धिक्कारते हुए ।।

१४

उबासी पर उबासी आने लगी, मुख रह गया खुला खुला,
किया उपचार घनेरा, वातावरण था शोक पूर्ण घुला घुला ।
आये गुरु वसिष्ठ, बुलाया हनुमान को, व्यस्त था राम जप–
बजाई चुटकी – प्रफुल्लित हुवा सब का मन फुला फुला ।।

१५

कोपीन सहित हुवा जन्म तुम्हारा – हो बल बुद्धि के आगार,
जितेन्द्रिय बाल व्रम्हचारी हो, तुम शक्ति के भंडार ।
सोने की सी देह तुम्हारी, शोभा सिंदूर निराली–
प्रफुल्लित हुआ मन, पंचमुख की छटा निहार निहार ।।

॥ श्री रघुवीराय नमः ॥

अतुलित बल धामं हेम शैलाभ देहं ।
दनुजवन कृशानुं ज्ञानी नाम अग्रगण्यम् ॥
सकल गुण निधान वानराणामधीशं ।
रघुपति प्रिय भक्तं वात जातं नमामि ॥

तोड़ फोड़ फैक दी माला, सीताराम दरस नहिं पाये।
निज हृदय चीर युगल छबि श्रीराम के दरशन कराये॥

॥ श्री रामः शरणं मम ॥

मंगल मूरति मारुत नंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन॥
पवन तनय संतन हितकारी। हृदय बिराजत अवध बिहारी॥
मात पिता गुरु गनपत सादर। सिवा समेत शंभु शुक नारद॥

चरण बंदि विनवो सब काहू। देहु रामपद नेहु निबाहू॥
बंदो राम लखन बैदेही। जे तुलसी के परम सनेही॥

१६

अतुलित बलशाली हो तुम, विद्या में हो अपरंपार,
सदा व्यस्त राम भजन में, पहिन लिया पति राम का हाथ ।
भस्म कर देते हो कौतुक में राक्षसों के वन को–
पूर्ण ज्ञान के हो भंडार, नमन करूं मैं बारंबार ॥

१७

श्री राम की कथा–अब भी होती हैं जहां जहां,
सर्व प्रथम हनुमंत लला पहुंचते हैं वहां ।
सब के अंत में वहांसे करते हैं प्रस्थान–
गदगद, अश्रुपूर्ण जपते हुए श्री राम का गुण ज्ञान ॥

"बेनी"

जाके गति है राम की ।
ताकी पैंज पूजि आई, यह रेखा कुलिस परवान की ॥
अघटित घटज, सुघट विघटन, ऐसी विरुदावली नहिं आन की ।
सुमिरत संकट–सोच विमोचन मूदति मोद-निधान की ॥
तापट सानुकुल गिरजा हट लखन राम अरु जानकी ।
तुलसी कपिकी कृपा विलोकनि खानि सकल कल्यान कीं ॥

॥ श्री राम रूप सुधा माधुरी ॥

सरद मयंक वदन छवि सीवा । चारू कपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥१॥
अधर अरुन रद सुन्दर नासा । विधुकर निकट निनिन्दक हासा ॥२॥
नव अंबुज अंवक छवि नीकी । चितवनि ललित भाँवती जीकी ॥३॥
भुकुटि मनोज चाप छवि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥४॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥५॥
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला । पदिक हार भूषण मनि जाला ॥६॥
के हरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु विभुषन सुन्दर तेऊ ॥७॥
कटि कर सरिस सुभग भुजदडा । कटि निषंग कर सर को दंडा ॥८॥
पद राजीव वरनीं नहिं जाही । मुनि मन मधुप वसहिं जिन्ह माहीं ॥९॥
वाम भाग सोभति अनुकुला । आदि सक्ति छबि निधि जगमूला ॥१०॥
छबि समुद्र हरि रूप विलोकी । एक टक रहे नेन पट रोकी ॥११॥
स्याम गोर सुन्दर दोउ जोरी । निरखहिं छवि जननी वृन तोरी ॥१२॥
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा । सूचत किरन मनोहर हासा ॥१३॥
कवहुँ उछंग कवहुँ वर पलना । भानु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥१४॥
काम कोटि छवि स्याम सरीरा । नील कंज वारिद गंभीरा ॥१५॥
अरुन चरन पंकज नख जोती । कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ॥१६॥
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ॥१७॥
कटि किंकनी उदर त्रय रेखा । नाभि गभिर जान जंहिं देखा ॥१८॥
भुज विशाल भूषन जुत भूरी । हियँ हरि नख अति सोभारूरी ॥१९॥
उर मनिहार पदिक की सोभा । विप्र चरन देखत मन लोभा ॥२०॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई । आनन अमित मदन छवि छाई ॥२१॥
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे । नासा तिलक को बरने पारे ॥२२॥
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥२३॥

चिक्कन कच कुँचित गभुआरे। वहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥२४॥
पीत झँगुलिया तनु पहिराई। जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥२५॥
वरनिन जाई रुचिर अँगनाई। जँह खेल हिं नित चारिउ भाई ॥२६॥
बाल विनोद करत रघुराई। विचरत अजिर जननि सुखदाई ॥२७॥
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा। अंग अंग प्रति छवि बहु कामा ॥२८॥
नव राजीव अरुन मृदु चरना। पदन रुचिर नख ससि दुति हरना ॥२९॥
ललित अंक कुलिसादिक चारी। नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥३०॥
चारु पुरठ मनि रचित वनाई। कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥३१॥
अरुन पानि नख करज मनोहर। बाहु विसाल बिभुषन सुंदर ॥३२॥
कंध बाल के हरि दर ग्रीवा। चारु चिबुक आनन छबि सींवा ॥३३॥
कलबल बचन अधर अरुनारे। दुइ दुइ दसन विसद वर बारे ॥३४॥
ललित कपोल मनोहर नासा। सकल सुखद ससिकर सम हासा ॥३५॥
नील कंज लोचन भव मोचन। भ्राजन भाल तिलक गोरोचन ॥३६॥
बिकट भ्रकुटि सम श्रवण सुहाये। कुंचित कच मेचक छबि छाये ॥३७॥
पीत झीनी झगुली तन सोही। किलकनि चितवनि भावति मोही ॥३८॥
रुप रासि नृप अजिर विहारी। नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥३९॥
मोहि सन करहिं विविध बिधी क्रीड़ा। बरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा ॥४०॥
किलकत मोहि धरन जब धावहि। चलउँ भागि तब पूप देखावहिं ॥४१॥
धूसर धूरि भरे तन आये। भूपति बिहसि गोद बैठाए ॥४२॥
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रुप चराचर मोहा ॥४३॥
अरुन नयन उर बाहु विसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला ॥४४॥
करि पर पीत कसे बर हाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा ॥४५॥
स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। विस्वामित्र महा निधि पाई ॥४६॥
पीत वसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा ॥४७॥
तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥४८॥
के हरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नाग मनि माला ॥४९॥

सुभग सोन सरसीरुह लोचन । बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥५०॥
कानन्हि कनक फूल छबि देहीं । चितवत चितही चोरि जनु लेहीं ॥५१॥
चितवनि चारु भृकटिबर बाँकी । तिलक रेखु सोभा जनु चाँकी ॥५२॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा । लोचन सुखद विश्व चित चोरा ॥५३॥
मुरति मधुर मनोहर देखी । भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥५४॥
सुन्दर स्याम गौर दोउ भ्राता । अनँदहु के आनंद दाता ॥५५॥
स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन बिनुबानी ॥५६॥
थके नयन रघुपति छबि देखें । पलकन्हिहुँ परि हरी निमेषें ॥५७॥
सोभा सींवँ सुभग दोउ वीरा । नील पीत जलजाभ सरीरा ॥५८॥
मोर पंख सिर सोहत नीके । गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥५९॥
भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाये । श्रवन सुभग भूषन छबि छाये ॥६०॥
विकट भृकुटि कच घूँघर वारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥६१॥
चारु चिबुक नासिका कपोला । हास विलास लेतु मनु मोला ॥६२॥
मुख छबि कहि न जाइ मोहि पाही । जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥६३॥
उर मनि माल कंबु कल ग्रीवा । काम कलभ कर भुजबल सींवा ॥६४॥
सुमन समेत बाम कर दोना । साँवर कुअँर सखी सुठि लोना ॥६५॥
सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥६६॥
सरद चंद निंदक मुख नीके । नीरज नयन भावते जी के ॥६७॥
चितवनि चारु मार मनु हरनी । भावति हृदय जाति नहिं बरनी ॥६८॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदुबोला ॥६९॥
कुमुद बंधु कर निंदक हाँसा । भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥७०॥
भाल बिसाल तिलक झलकाही । कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥७१॥
पीत चौतनी सिरन्हि सुहाई । कुसुम कलीं बिच बीच बनाई ॥७२॥
रेखें रुचिर कंबु कल गावाँ । जनु त्रिभुवन सुषमा की सींवाँ ॥७३॥
गुन सागर नागर बर बीरा । सुन्दर स्यामल गौर सरीरा ॥७४॥
राज समाज बिराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग बिधु पुरे ॥७५॥

जिन्ह कें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी वैसी ।।७६।।
देखहिं रुप महा रनधीरा । मनहुँ वीर रसु धरें सरीरा ।।७७।।
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक भूरति भारी ।।७८।।
रहे असुर छल छोनिप वेषा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ।।७९।।
पुरवासिन्ह देखे दोउ भाई । नरभूषन लोचन सुखदाई ।।८०।।
विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ।।८१।।
जनक जाति अवलोकहिं कैसें । सजग सगे प्रिय लागहिं जैसें ।।८२।।
सहित विदेह बिलोकहिं रानी । सिसु सम प्रीति जाति वखानी ।।८३।।
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा । सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा ।।८४।।
हरि भगतन्ह देखे दोउ भ्राता । इष्ट देव इव सब सुख दाता ।।८५।।
रामहिं चितव भायँ जेहि सीया । सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ।।८६।।
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कबि कोऊ ।।८७।।
एही विधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ।।८८।।
कटि तुनीर पीत पट बाँधे । कर सर धनुष बाम बर काँधे ।।८९।।
पीत जग्य उपवीत सुहाये । नख सिख मंजु महा छबि छाये ।।९०।।
ए दोऊ दसरथ के ढोटा । बाल मरालन्हि के कल जोटा ।।९१।।
मुनि कौसिक के मख रखवारे । जिन्ह रन अजर निसाचर मारे ।।९२।।
स्याम गात कल कंज बिलोचन । जो मारीच सुभुज मद मोचन ।।९३।।
कौसल्या सुत सो सुख खानी । नाम राम धनु सायक पानी ।।९४।।
गौर किसोर बेषु वर काछें । कर सर चाप राम के पाछें ।।९५।।
लछिमन नाम राम लघु भ्राता । सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ।।९६।।
स्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहि देखि जो आये ।।९७।।
कंकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा ।।९८।।
ब्याह विभुषन बिबिध बनाए । मंगल सब सब भाँति सुहाए ।।९९।।
सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन । नयन नवल राजीव लजावन ।।१००।।
कुअँरु कुअँरि कल भाँवरि देहीं । नयन लाभ सब सादर लेहीं ।।१०१।।

जाई न बरनि मनोहर जोरी । जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥१०२॥

राम सिय सुंदर परिछाहीं । जगमगात मनि खंभन माहीं ॥१०३॥

मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । देखत राम बिआहु अनुपा ॥१०४॥

राम सिय सिर सिंदूर देहीं । सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ॥१०५॥

अरुन पराग जलजु भरि नीकें । ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें ॥१०६॥

सोहति सिय राम की जोरी । छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥१०७॥

स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ॥१०८॥

जावक जुत पद कमल सुहाए । मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाये ॥१०९॥

पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बाल रवि दामिनि जोती ॥११०॥

कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु बिसाल बिभुषन सुंदर ॥१११॥

पीत जनेउ महाछबि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥११२॥

सोहत ब्याह साज सब साजे । उरु आयत उर भूषण राजे ॥११३॥

पिअर उपरना काखा सोती । दुहुँ आचरन्हि लगे मनि मोती ॥११४॥

नयन कमल कुंडल काना । बदनु सकल सौंदर्ज निधाना ॥११५॥

सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलक रुचिरता निवासा ॥११६॥

सोहत मौरु मनोहर माथे । मंगल मय मुकता मनि गाथे ॥११७॥

नीदऊँ बदन सोह सुठिलोना । मनहुँ साँझ-सरसीरुह सोना ॥११८॥

को रघुवीर सरिस संसारा । सीलु सनेहु निबाहनिहारा ॥११९॥

एक टक सब सोहहीं चहुँ ओरा । रामचंद मुख चन्द चकोरा ॥१२०॥

तरुन तमाल बरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥१२१॥

दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जीके ॥१२२॥

मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥१२३॥

सहज सुभाय सुभग तनु गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ॥१२४॥

बहुरि वदनु विधु अँचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ॥१२५॥

खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सियँसयननि ॥१२६॥

भई मुदित सब ग्राम बधूटी । रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं ।।१२७।।
आगे राम लखनु बने पाछे । तापस वेष बिराजत काछें ।।१२८।।
उभय बीच सिय सोहति कैसें । ब्रह्म जीव बीच माया जैसे ।।१२९।।
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधे । तून कसें कर सरु धनु काँधें ।।१३०।।
वेदी पर मुनि साधु समाजू । सिय सहित राजत रघुराजू ।।१३१।।
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा । जनु मुनि वेष कीन्ह रति कामा ।।१३२।।
कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय कीजरनि हरत हँसि हेरत ।।१३३।।
सरसिज लोचन बाहु बिसाला । जटा मुकुट सिर उर बन माला ।।१३४।।
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई । सबरी परी चरन लपटाई ।।१३५।।
स्याम गात सिर जटा बनाए । अरुन नयन सर चाप चढाएँ ।।१३६।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।।१३७।।
सिंह कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मन मोहा ।।१३८।।
स्याम ताम रस दाम सरीरं । जरा मुकुट परिधन मुनि चीरं ।।१३९।।
पाणि चाप सर कटि तूनीरं । नौमि निरंतर श्री रघुवीरं ।।१४०।।
प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा । बाम दहिन दिसि चाप निषंगा ।।१४१।।
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना । कह लंकेस मंच लगि काना ।।१४२।।
बड़भागी अंगद हनुमाना । चरन कमल चापत बिधि नाना ।।१४३।।
प्रभु पाधें लछिमन वीरासन । कटि निषंग कर बान सरासन ।।१४४।।
स्याम गात सरसीरुह लोचन । देखो जाय ताप त्रय मोचन ।।१४५।।
पुनि निज जटा राम बिबराए । गुरु अनुसाशन मागि नहाए ।।१४६।।
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ।।१४७।।
प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंहासन मागा ।।१४८।।
रवि सम तेज सो बरनी न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई ।।१४९।।
जनकसुता समेव रघुराई । पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ।।१५०।।
बेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जयजयति पुकारे ।।१५१।।

प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा । पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥१५२॥
सुत बिलोकि हरषीं महतारी । बार बार आरती उत्तारी ॥१५३॥

– संकलन कर्ता –
" बेनीं "

दो.– मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।
अस ब्रिचारि रघुबंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥

नीलाम्बुज श्यामल कोमलांगम् । सीता समारोपित वाम भागम् ॥
पाणौ महा सायक चारु चापम् । नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥

रामं रामानुजं सीता भरतंच भरतानुजम् ।
सुग्रींव वायुसूनंमच प्रणमामि पुनः पुनः ॥

नील सरोरुह नील मणि, नील नीर धर श्याम ।
लाजहि तन सोभा निरखि, कोटि कोटि सतकाम ॥
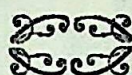
-:- श्री राम स्तुति -:-

श्री रामचन्द्रजी का जन्म सूर्य वंश मे हुवा। सूर्य एक साल में सत्ताइस नक्षत्रों (व अट्ठाइसवां अभिजित नक्षत्र) की फेरी देता है। भला तुलसीदासजी स्तुति के लिये इस से अच्छा अवसर कौन सा ढूंढते।

नक्षत्रों के अनुक्रम अनुसार तथा (१) नाम साम्य (२) तारा साँख्य साम्य (३) आकार साम्य (४) देवता साम्य (५) व फल श्रुति साम्य के अनुसार श्री राघवेन्द्र की अट्ठाइस स्तुति की।

विशेष विवरण के लिये श्री मानस पियूष (गीत प्रेस) में स्वामी प्रज्ञानन्दजी सरस्वती व विजयानन्दजी त्रिपाठी द्वारा दी हुई विस्तृत टीका पढे।

	काण्ड	नक्षत्र	द्वारा	स्तुति के प्रथम पंक्ति के कुछ शब्द
१	बालकाण्ड	अश्विनी	ब्रह्माजी द्वारा	जय जय सुरनायक...
२	,,	भरणी	कौशल्याजी	भये प्रकट कृपाला...
३	,,	कृतिका	अहिल्याजी	परसत पद पावन...
४	,,	रोहिणी	श्री परसरामजी	जय रघुवंश बनज बन भानू...
५	,,	मृगशीर्ष	सुनयनाजी	करि विनय सिय रामहि...
६	,,	आर्द्रा	जनकजी	राम कहौं केहि भाँति प्रशंसा...
७	अयोध्याकांड	पुनर्वसु	भरद्वाजजी	आजु सुफल तप तीरथ त्यागू...
८	,,	पुष्य	वाल्मीकीजी	श्रुति सेतु पालकराम तुम्ह...
९	अरण्यकाण्ड	आश्लेखा	अत्रिऋषि	नमामी भक्त वत्सलं...
१०	,,	मघा	ऋषि शरभंगजी	कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला...
११	,,	पूर्वाफाल्गुनी–	सुतिक्षणजी	श्याम ताम रस दाम शरीरं...

	काण्ड	नक्षत्र	द्वारा	स्तुति के प्रथम पंक्ति के कुछ शब्द
१२	"	उत्तराफाल्गुनी	कुंभजऋषि	तुम्हरे भजन प्रभाव अघारि...
१३	"	हस्त	गृधराजजटायूजी	जय राम रूप अनूप निर्गुन...
१४	किष्किन्धाकाण्ड	चित्रा	हनुमानजी	पुनि धीरज धरि स्तुति कीनी...
१५	सुन्दरकाण्ड	स्वाति	विभीषणजी	सुनत विभीषनु प्रभु कै बानी...
१६	लंकाकाण्ड	विशाखा	सर्व देव कृत	दीन बंधु दयाल रघुराया...
१७	"	अनुराधा	श्री ब्रह्माजी	जय राम सदा सुख धाम हरे...
१८	"	ज्येष्ठा	श्री इन्द्र	जय राम सोभा धाम...
१९	"	मूल	श्री त्रिपुरारी	मामि भिरक्षय रघुकुल नायक...
२०	उत्तरकाण्ड	पूर्वाषाढा	वेदोद्वारा	जय सगुन निर्गुण रूप अनूप...
२१	"	उत्तराषाढा	श्री शंकरजी	जय राम रमा रमनं समनं...
२२	"	अभिजित	निशब्द स्तुति	सुनि प्रभु वचन मगन सब भये...
२३	"	श्रवण	अंगद द्वारा	सुनु सर्वज्ञ कृपा सुख सिंधो...
२४	"	घनिष्ठा	पुरजन कृत	जँह वँह नर रघुपति गुण गावति...
२५	"	शततारका	श्री सनकादिक	जय भगवंत अनंत अनामय...
२६	"	पूर्वाभाद्रपदा	पुरजनोद्वारा	जननि जनक गुरु बंधु हमारे...
२७	"	उत्तरभाद्रपदा	वसिष्ठजी	राम सुनहु मनि कह कर जोरी...
२८	"	रेवती	नारदजी	माभव लोकय पंकज लोचन...

॥ श्री विष्णु (श्रीराम) अस्तुति १ ॥

श्री ब्रह्माजी द्वारा – अश्विनी नक्षत्र

छं.– जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्‌भुत करनी मरम न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दिनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥

जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगतमोह मुनिवृंदा।
निसि वासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ।।
जेहिं सृष्ठि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अधारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ।।
जो भव भय भंजन मुनिमन रंजन गंजनविपति बरूथा।
मन वच क्रम बानी छाड़ि सयानि सरनसकल सुर जूथा ।।
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ।।
भव भव बारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर जमत नाथ पद कंजा ।।

।। श्री राम अस्तुति २ ।।

कौसल्याजी द्वारा – भरणी नक्षत्र

छं.– भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ।।१।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेंहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।२।।

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि किन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।३।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलिला अति प्रियसीला यह सुख परम अनुपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभुपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ।।४।।

।। श्री राम अस्तुति ३ ।।

अहिल्याजी द्वारा – कृतिका नक्षत्र

छं.– परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सहीं ।।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होई कर जोरि रही ।।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवाइ बचन कही ।।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ।।
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ।।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।।
राजीव बिलोचन भवभय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ।।
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना ।।
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।।
जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ।।
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परीं ।।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। ४ ।।

श्री परसरामजी द्वारा – रोहिणी नक्षत्र

छं.– जय रघुबंस वनज बन भानू ।.गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।।
जय सुर विप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रम हारी ।।
विनय सील करुना गुन सागर । जयनि बचन रचना अति सागर ।।
सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय सरीर छबि कोटि अनंगा ।।
करौं काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ।।
अनुचित वहुत कहेऊँ अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ।।
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए बनहि तप हेतू ।।
अपभयँ कुटिल महीप डेराने । जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। ५ ।।

सुनयनाजी द्वारा – मृगशीर्ष नक्षत्र

छं – करिबिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।
वलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुँ विदित गति सब की अहै ।।
परिवार पुजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी ।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी ।।

सो.– तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय ।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ।।

अस कहि रही चरन गहि रानी । प्रेम पंक जनु गिरा समानी ।।
सुनि सनेह सानी बर बानी । बहुबिधिराम सासु सनमानी ।।

॥ श्री राम अस्तुति ॥ ६ ॥

श्री जनकजी द्वारा – आर्द्रा नक्षत्र

चौ.– राम करौं केहि भाँति प्रसंसा । मुनि महेस मन मानस हंसा ॥
करहिं जोग जोगी जेहि लागीं । कोहु मोहु ममता मदु त्यागी ॥
ब्यापकु ब्रह्म अलखु अबिनासी । चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी । तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥
महिमा निगमु नेति कहि कहई । जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥

दो.– नयन विषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल ।
सबइ लाभु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकुल ॥

चौ.– सबहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई । निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥
होंहि सहस दस सारद सेषा । करहिं कलप कोटिक भरि लेखा ॥
मोर भाग्य राउर गुन गाथा । कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥
मै कछु कहउँ एक बल मोरें । तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥
बार बार मागउँ कर जोरें । मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे । पूरनकाम रामु परितोषे ॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने । पितु कौसिक बासिष्ठ सम जाने ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ ७ ॥

ऋषि श्री भरद्वाजजी द्वारा – पुनर्वसु नक्षत्र

चौ.– आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग बिरागु ॥
सफल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकन आजू ॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी । तुम्हरे दरस आस सब पूजी ॥
अब करि कृपा देहु वर एहु । निज पद सरासिज सहज सनेहू ॥

दो.– करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार ।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नही किएँ कोटि उपचार ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। ८ ।।

ऋषि श्री बाल्मीकीजी द्वारा -- पुश्य नक्षत्र

छं.– श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाई कृपानिथान की ।।
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ।।

सो – राम सरुप तुम्हार वचन अगोचर बूद्धिपर ।
अविगत अकथ अपार नेति नेति निगम कह ।।

चौ.– जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । बिधि हरि संभु नचावनिहारे ।।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । औरु तुम्हहि को जाननिहारा ।।
सोई जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ।।
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ।।
चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत बिकार जान अधिकारी ।।
नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ।।
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जड मोहहिं बुध होहिं सुखारे ।।
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। ९ ।।

श्री अत्रि ऋषि द्वारा – अश्लेखा नक्षत्र

छं.– नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।।
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ।।

निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥

प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥

दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥

मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दुष्णापहं ॥
नमामि इंदिरा पति । सुखाकर सतां गति ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शचि पति प्रियानुजं ॥

त्वदंघ्रि मूल ये नरा: । भजंति हीन मत्सरा: ॥
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीची सकुले ॥

विविक्त वासिन: सदा । भजंति मुक्तयें मुदा ॥
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥

तमेकमभ्दुतं प्रभुं । निरीहमीश्वर विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥

भजामि भाव वल्लभं । कुयोगिना सुदुर्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्ययमन्वहं ॥

अनुप रुप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥

पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुता: ॥

दो.- विनती करि मुनि नाई सिरु कह कर जोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥

।। श्री राम अस्तुति ।। १० ।।

ऋषि श्री सरभंगजीव्दारा – मघा नक्षत्र

चौ – कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला । संकर मानस राजमराला ।।
जात रहेउँ बिरंचि के धामा । सुनेउँ श्रवन बन ऐहहिं रामा ।।
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती । अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ।।
नाथ सकल साधन मैं हीना । कीन्ही कृपा जानि जन दीना ।।
सौ कछु देव न मोहि निहोरा । निज पन राखेउ जन मन चोरा ।।
तब लगि रहहु दीन हित लागी । जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी ।।
जोग जग्य जप तप ब्रत कीन्हा । प्रभु कंहँ देइ भगति बर लीन्हा ।।
एहि बिधी सररचि मुनि सरभंगा । बैठे हृदयँ छाडि सब संगा ।।

दो.– सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम ।
मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। ११ ।।

ऋषि श्री सुतिक्षणजी व्दारा – पूर्वा फाल्गुनी

चौ.– कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन बिधी तोरी ।।
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी ।।
श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ।।
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ।।
मोह विपिन घन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ।।
निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ।।
अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ।।
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ।।
संशय सर्प ग्रसन उरगादः । शयन सुकर्कश तर्क विषादः ।।

भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ।।
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ।।
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ।।
भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ।।
अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ।।
अतुलित भुज प्रताप बाल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः ।।
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ।।
जदपि विरज व्यापक अविनासी । सब के हृदयँ निरंतर बासी ।।
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ।।
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ।।
जो कोसल पति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मय अयना ।।
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ।।
सुनि मुनि बचन राम मन भाए । बहुरि हरषि मुनिवर उर लाए ।।
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही । जो बर मागहु देउँ सो तोही ।।
मुनि कह मै बर कबहुँ न जाचा । समुझि न परइ झुठ का साचा ।।
तुम्हहि नीक लागे रघुराई । तो मोहि देहु दास सुखदाई ।।
अबिरल भगति बिरति बिग्याना । होहु सकल गुन ग्यान निधाना ।।
प्रभु जो दीन्ह सो बरु मै पावा । अब सो देहु मोहि जो भावा ।।

दो.- अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम ।।
मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। १२ ।।

ऋषि श्री कुंभज द्वारा – उत्तरा फालगुनी नक्षत्र

चौ.- तुम्हरेइँ भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ।।
ऊमरि तरु विसाल तब माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ।।

जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ।।
ते फल भच्छक कठिन कराला । तव भँय डरत सदा सोउ काला ।।
ते तुम्ह सकल लोकपति साई । पूछेहु मोहि मनुज की नाई ।।
यह वर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ।।
अविरल भगति बिरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीती अभंगा ।।
जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभव गम्य भजहि जेहि संता ।।
अस तव रुप बखानउँ जानउँ । फिरि फिरि सगुन ब्रम्ह रति मानउँ ।।
संतत दासन्ह देहु बड़ाई । ताते मोहि पूँछेहु रघुराई ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। १३ ।।

गृद्धराज जटायु द्वारा – हस्त नक्षत्र

छंद– जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ।।
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं ।।१।।
बलमप्रमेयमनादिपजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोविंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं ।।
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कमादि खल दल गंजनं ।।२।।
जेहि श्रुति निरंजन ब्रम्ह व्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ।।
सो प्रगट करुनाकंद सोभावृंद अग जग मोहई ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ।।३।।
जो अगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा ।
पस्यंतिजं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ।।
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ।।४।।

॥ श्री राम अस्तुति ॥ १४ ॥

हनुमानजी द्वारा – चित्रा नक्षत्र

चौ.– पुनि धीरजु धरि आस्तुति कीन्ही । हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ॥
मोर न्याउ मैं पूछा साईं । तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ॥
तव माया बस फिरउँ भुलाना । ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दो.– एकु मै मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान ।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें ॥
नाथ जीव तव मायाँ मोहा । सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा ॥
ता पर मै रघुबीर दोहाई । जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक सुत पति मातु भरोसें । रहइ असोच बनइ प्रभु पोसें ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ १५ ॥

विभीषनजी द्वारा – स्वाति नक्षत्र

चौ.– सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
पद अंबुज गहि बारहिं बारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रिति सरित सो बही ॥
अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ १६ ॥ ॥

सर्व देव कृत – विशाखा नक्षत्र

चौ.– दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवेन्ह पर दाया ॥

बिस्व द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगगामी ।।
तुम्ह समरुप ब्रम्ह अविनासी । सदा एकरस सहज उदासी ।।
अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोघसक्ति करुणामय ।।
मीन कमठ सूकर नरहरी । वामन परसुराम बपु धरी ।।
जब जब नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हइँ नसायो ।।
यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति ।।
अधम शिरोमनि तव पद पावा । यह हमरें मन बिसमय आवा ।।
हम देवता परम अधिकारी । स्वारथरत प्रभु भगति बिसारीं ।।
भव प्रवाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ।।

दो – करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहँ तहँ कर जोरि ।
अति सप्रेम तन पुलकि बिधि अस्तुति करत बहोरि ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। १७ ।।

श्री ब्रम्हाजी द्वारा – अनुराधा नक्षत्र

छंद– जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ।।
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सतार नागर नाथ बिभो ।।
तन काम अनेक अनूप छबी । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ।।
जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ।।१।।
जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।।
अवतार उदार अपार गुनं । महि भार विभंजन ग्यानघनं ।।
अज व्यापक मेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ।।
रघुवंस विभूषन दूषन हा । कृत भूप बिभीषण दीन रहा ।।२।।
गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ।।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल बृंद निकंद महा कुसलं ।।
बिनु कारन दीन दयाल हितं । छबि धाम नमामि रमा रहितं ।।
भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारून दोष हरं ।।३।।

सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूपबरं ॥
सुख मंदीर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होई न गो ॥
इति बेद बदंति न दंतकथा । रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा ॥४॥

कृत्तकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥
धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयाल दया करिऐ । मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ ॥
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ । दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ॥५॥
खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित सभु उमा ॥
नृप नायक दे बरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ॥

दो.– बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।
सोभा सिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ १८ ॥

श्री. इंद्र द्वारा – जेष्ठा नक्षत्र

छं.– जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत बिश्राम ॥
धृत त्रोन बर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥१॥
जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥
यह दुष्टे मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ॥२॥
जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ॥
जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान बिहाल ॥३॥
लंकेस अति बल गर्व । किए बस्य सुर गंधर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग । हठि पंथ सब कें लाग ॥४॥
परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ॥
अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन बिसाल ॥५॥

मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ॥
अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ॥६॥
कोउ ब्रम्ह निर्गुन ध्याव । अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥
मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ॥७॥
बैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ॥
मोहि जानिऐ निज दास । दे भक्ति रमा निवास ॥८॥

छं.– दे भक्ति रमानिवास । त्रास हरन सरन सुखदायकं ।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलितबलं ॥
ब्रम्हादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ १९ ॥

श्री. शंकरजी द्वारा – मूल नक्षत्र

छं.– मामभिरक्षय रघुकुल नायकाधृत बर रुचिर कर सायक ॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय बिपिन अनल सुर रंजन ॥
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मन कानन ॥२॥
विषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदार पार मन ॥
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारय तारम संसृति दुस्तर ॥३॥
स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन बंधु प्रनतारति मोचन ॥
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥४॥
मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन ॥५॥

दो.– नाथ जबहिं कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार ।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ॥

।। श्री राम अस्तुति ।। २० ।।

वेदों द्वारा – पुर्वाषाढा नक्षत्र

छं.– जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने ।।
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुन दुख दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संयुक्त सक्ति नमामहे ।।१।।

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ।।
जे नाथ करि करुना विलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे ।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे ।।२।।

जे ग्यान मान विमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ।।
विस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।

जपि नाम तव विनु श्रम तरहिं भव नाथ सोमरामहे ।।३।।
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ।।
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ।।४।।

अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ।।
फल जुगल विधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ।।५।।

जे ब्रम्ह अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ।।
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं ।
मन बचन कर्म विकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ।।६।।

॥ श्री राम अस्तुति ॥ २१ ॥

श्री. शंकरजी द्वारा – उत्तराषाढा नक्षत्र

छं.– जय राम रमारमनं समनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥
दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥१॥

महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावँर भूलि परे ॥२॥

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥
भवसिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥३॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ॥
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥४॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । महिपाल बिलोकय दीन जनं ॥

दो.– बार बार बर मागऊँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ २२ ॥

भाव मय निशब्द अस्तुति – अभिजित नक्षत्र

चौ.– सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥
एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कुछ कहि अति अनुरागे ॥
परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा बिबिध बिधी ग्यान बिसेखा ॥
प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ॥
तब प्रभु भूषन बसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनाए ॥
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥
अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो.– जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ २३ ॥

अंगद द्वारा – श्रवण नक्षत्र

चौ.– सुनु सर्बग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥
मरती बेर नाथ मोहि बाली । गयउ तुम्हारेहि कोंछें घाली ॥
असरन सरन बिरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी ॥
मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥
तुम्हहि बिचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥
बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥
नीचि टहल गृह कै सब करिउँ । पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ ॥
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो.– अंगद बचन बिनीत सुनि रघुपति करुना सींव ।
प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥

।। श्री राम अस्तुति ।। २४ ।।

पुरजन व्दारा – धनिष्ठा नक्षत्र

चौ.– जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं । बैठि परसपर इहइ सिखावहिं ।।
भजहु प्रणत प्रतिपालक रामहि । सोभा सील रूप गुन धामहि ।।
जलज बिलोचन स्यामल गातहि । पलक नयन इव सेवक त्रातहि ।।
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । संत कंज बन रबि रणधीरहि ।।
काल कराल व्याल खगराजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ।।
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । मनसिज करि हरि जन सुखदातहि ।।
संसय सोक निविड़ तम भानुहि । दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ।।
जनकसुता समेत रघुवीरहि । कस न भजहु भंजन भव भीरहि ।।
बहु बासना मसक हिम रासिहि । सदा एकरस अज अविनासिहि ।।
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ।।

दो – एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान ।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। २५ ।।

श्री सनकादिक व्दारा – शततारका नक्षत्र

चौ.– सुनि प्रभु बचन हरिष मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ।।
जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ।।
जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ।।
जय इंदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभा कर ।।
ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेद बद ।।
तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ।।
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय । बससि सदा हम कहुँ परिपालय ।।
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय । हृदि बसि राम काम मद गंजय ।।

दो.– परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ।।

चौ.– देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविधि ताव भवदाप नसावनि ।।
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरू ।।

भव बारिधि कुंभज रघुनायक। सेवत सुलभ सकल सुख दायक ।।
मन संभव दारून दुख दारय। दीनबंधु समता बिस्तारय ।।
आस त्रास इरिषाहि निवारक। बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ।।
भूप मौलि मनि मंडन धरनी। देहि भगति संसृति सरि तरनी ।।
मुनि मन मानस हंस निरंतर। चरन कमल बंहित अज संकर ।।
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक। काल करम सुभाउ गुन भच्छक ।।
तारन तरन हरन सब दूषन। तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन ।।

दो.- बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरू नाइ ।
ब्रम्ह भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। २८ ।।

पुरजनों द्वारा – पुर्बा भाद्रपदा

चौ.- सुनत सुधासम बचन राम के। गहे सबनि पद कृपाधाम के ।।
जननि जनक गुर बंधु हमारे। कृपा निधान प्रान ते प्यारे ।।
तनु धनु धाम राम हितकारी। सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी ।।
असि सिख तुम्ह बिनू देइ न कोऊ। मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ।।
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ।।
स्वारथ मीत सकल जग माहीं। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ।।
सब के बचन प्रेम रस साने। सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने ।।
निज निज गृह गए आयसु पाई। बरनत प्रभु बतकही सुहाई ।।

।। श्री राम अस्तुति ।। २७ ।।

श्री वसिष्ठजी द्वारा – उत्तरा भाद्रपदा

चौ – राम सुनहु मुनि कह कर जोरी। कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ।।
देखि देखि आचरन तुम्हारा। होत मोह मम हृदयँ अपारा ।।

महिमा अमिती बेद नहिं जाना । मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना ॥
उपरोहित्य कर्म अति मंदा । बेद पुरान सुमृति कर निंदा ॥
जब न लेउँ मैं तब बिधि मोही । कहा लाभ आगें सुत तोही ॥
परमातमा ब्रम्ह नर रूपा । होइहि रघुकुल भूषन भूपा ॥
दो.– तब मैं हृदयँ बिचारा जोग जग्य ब्रत दान ।
जा कहुँ करिअ सो पैहउँ धर्म न एहि सम आन ॥

चौ.– जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुरान अनेका । पढे सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ॥
छूटइ मल कि मलहि के धोएँ । घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएँ ॥
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्बग्य तग्य सोइ पंडित । सोइ गुन गृह बिग्यान अखंडित ॥
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । जाकें पद सरोज रति होई ॥
दो.– नाथ एक बार मागउँ राम कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ॥

॥ श्री राम अस्तुति ॥ २८ ॥

श्री नारदजी द्वारा – रेवती नक्षत्र

चौ.– मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन ॥
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥
जातु धान बिरूथ बल भंजन । मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ॥
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ॥
भुज बल बिपुल भार महि खंडित । खर दूषन बिराध बध पंडित ॥
रावनारि सुखरूप भूपवर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

।। श्री रामः शरणं मम ।।

रघुपति राघव राघवेति

(१)

निर्बल के बल राजाराम पतित पावन अयोध्यापति राम ।
सदा दीनन के रखवारे – रघुपति राघव राघवेति ।।१।।

(२)

जानकीनाथ जब सहाय करें – कौन विगार कर नर तेरा ।
राम नाम सदा सुखदाई – रघुपति राघव राघवेति ।।२।।

(३)

श्री राम हैं गरीब निवाज, हैं दीनन दुखियन के हितकारी ।
आर्त की सदा सुनते पुकार, रघुपति राघव राघवेति ।।३।।

(४)

जल मे राम, थल में राम, नभ में राम, राम मय जग सारा ।
अदभूत है राम नाम प्यारा – रघुपति राघव राघवेति ।।४।।

(५)

तो में राम, मों में राम, कण कण में बस राम बिराजत है ।
राम नाम की महिमा न्यारी – रघुपति राघव राघवेति ।।५।।

(६)

मन में राम, नयनों में राम, घठ घठ में श्री राम बसा ले ।
रोम रोम से बस निकसे 'श्रीराम' – रघुपति राघव राघवेति ।।६।।

(७)

राम नाम जग ओत प्रोत सारा – की परिक्रमा गणपतीजी ने ।
बजवा दिये जीत के ढोल – रघुपति राघव राघवेति ।।७।।

(८)

आपदाएं हरते श्रीराम, सब संपदा देते श्रीराम ।
सदा नमन करो प्रभु श्रीराम – रघुपति राघव राघवेति ॥८॥

(९)

राम का सदा जाप करूं – मेरी खुशियां हैं राममय ।
मैं हूं रामजी का चाकर – रघुपति राघव राघवेति ।

(१०)

राम नाम रति, राम नाम गति – राम नाम शुभ मंगल विस्वास ।
राम नाम जप से मिलन सिद्धि – रघुपति राघव राघवेति ॥१०॥

(११)

राम जप, राम ही ध्यान, राम नाम तीरथ, यही परम ज्ञान ।
राम नाम चारों वेद पवित्र – रघुपति राघव राघवेति ॥११॥

" बेनी "

॥ श्रीरामः शरणं मम ॥

जृम्भकास्त्र

माता कौशल्याने पूछा
कहो सीते–

करो वर्णन – वर्ष चौदह कैसे बीते

चित्रकूट का किया वर्णन,
फिर किया वर्णन–
भिन्न भिन्न ऋषियों के आश्रम का
बराक्षसों के अत्याचार से कैसा था उन का हाल–
व कैसे अनुसूयाजी की सीख से हुई व मालामाल ॥

दण्डकारण्य में फिर किया निवास,
शुर्पणखां को लगा प्रभु राघुवेन्द्र का सुवास ।
खर दूषण संग हुई लड़ाई,
कांचन मृग के लोभ में – प्रभु से हुई जुदाई ।।
लक्ष्मण रेखा का किया उल्लंघन–
फंस गई रावण के कपट जाल के बंधन–
माता कौशल्याने
रावण के रूप का वर्णन करने को कहा–
थर थर कांपने लगी सीता
सूख गये बयन,
भयभीत हुए नयन,
माताजीने कहा – कोई बात नहीं ।
तुम हो कुशल चित्रकार–
तुलिका से वर्णन करो उस का आकार ।।
शयन कक्ष पहुँचे श्री राघवेन्द्र,
देखी एक बात विचित्र,
श्री महारानी सीता थी व्यस्त – बनाने में एक चित्र, ।
चित्र था लंकाधिपती का–
जागा विवेक अवधपति का–
क्या भावी रघुवंश-मणी
होगा नहीं पूर्णतया रघुवंश-मणी ।।
गर्भस्थ शिशु के संस्कार
जैसे सोचे माता – वैसा लेते हैं आकार ।।
आई याद हनुमंत की बात,
प्रफुल्लित हुवा गात गात ।
अशोक वाटिका में जब रहतीं थी सीता ।
आठों प्रहर राम राम जपती थी सीता ।।
त्याग दी सीता–

॥ श्री राजीव लोचनाय नमः ॥

मंगलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणाब्धये।
चक्रवर्ति तनुजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥

सब भरोस तजि जो भज रामहिं,
प्रीति समेत गाव गुन ग्रामहि।
सोई भव तर कछु संशय नाहिं,
नाम प्रभाव प्रगट कलि माहिं॥

अयोध्या से किया निष्कासन।
भेज दी वन में- रही बाल्मीकि के अनुशासन ॥

लव कुश का जन्म हुवा-

हुवा लालन पालन आश्रम में।
सीता ने दी धनुर्वेद की शिक्षा-
वाल्मीकजीने संगीत व धर्म में निपुण वनाया ॥

बर्षो के बर्ष बीते-

अश्वमेघ यज्ञ रचाया प्रभु श्रीराम,
सुवर्ण की सीता स्थापित को राम।
चला अश्व.
चली असंख्य चतुरंगिणी सेना संग
करने विजय ग्राम ग्राम ॥

अश्व को बांध लिया लव कुश ने
किया युद्ध का आवाहन।
हुई घमासान घनघोर लड़ाई
स्वयंभु प्रकटे राघवेन्द्र के अस्त्र शस्त्र
जृम्भाकास्त्र का भी किया प्रयोग-
शत्रुघ्न, हनुमान, विभिषण, सुग्रीव,
जाम्बन्त व अंगदादि वीरों को
बांध लिया करके घायल गहन ॥
धराशाई हुए राघव सेना के वीर,
बचे खुचे जा पुकारे सरयू के तीर।
युद्ध भूमि का निरिक्षण करने पधारे श्री रघुवीर ॥
जृम्भाकास्त्र के प्रयोग, पिडित थे सेना के सब वीर ॥

जृम्भाकास्त्र को जब विश्वमित्रने किया था प्रदान,
कहा था यह अस्त्र है अमोघ, बलशाली व महान।

विश्व में इसे में जानूं या अब तुम जानो रघुवीर
चकित हुई सीताजी देख कर शत्रुघ्न आदि वीर ।।
रणभूमि में पधारे ऋषि वाल्मीकि लवकुश व सीताजी के संग ।
प्रगट हुवा रहस्य सारा अपने ही निराले ढंग ।।

"बेनी"

॥ श्री रामः शरणं मम ॥

॥ सति सिरोमणी श्री सीताजी ॥

(१)

सुन कर रघुकुल सिरोमणी श्री राम के अति कटु बैन,
आँसू छल छल छलके श्री विदेह कुमारी कें नैन ।
सिय करी पुकार आर्त वाणी पृथिवी माता से—
निज धाम बुला लो, माँ – रहूँ नहीं ईहँ अब इक रैन ।।

(२)

प्रगट हुई धरणी देवी आसीन निज सिंहासन,
सिय को बिठा कर गोद में किया प्रेम से आलिंगन ।
दोउ कर जोर की छमा याचना नत मस्तक श्रीराम—
शनैः शनैः चला सिंहासन पाताल के आँगन ।।

(३)

जाते ही सिय के चरण कमल – विलखे लखन व देवर,
कर कमलों के जातेही – राम हिय जागी गाथा स्वयंवर ।
हृदय कमल के लोप – रोने लगे लवकुश, हनु, अंगदादि—
गये जब नयन कमल – मानो राहू निगलगया दिनकर ।।

(४)

चकित भये श्रीराम शोकाकुल – लवकुश हनु आदि सब देवर,
बदले तेवर कुल वधुओं के – फैंक दिये सब जेवर ।
अमर रहेगी यह गाथा जब लों पृथिवी पर है जीवन—
सीता है सति सिरोमणी – अर्चित कुंकुम केशर ।।

" बेनी "

राम राज्य

(१)

श्री भरतजी ने चित्रकूट में रामराज्यकी, की स्थापना,
गुरु वसिष्ठ, मिथिलेश व ऋषियों ने व्यक्त की शुभकामना।
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की पादुका को किया सिंहासन आरूढ—
भरतजी ने नंदिग्राम में निजकुटि में की आराधना ॥१॥

(२)

राम राज्य की अजीब व निराली थी हर रीत,
परिवर्तन कर रिपु का हृदय, बनाती थी रिपु को मीत।
हर देश में जन तंत्र वहुमत से चलता है—
किन्तु यहाँ सिर्फ सर्व सम्मति ही गाती थी गीत ॥२॥

(३)

शील का मिथ्याचार से नहीं था प्रयोजन,
सत्य का था नहीं आत्म केन्द्रित नियोजन।
आयोजन था राम राज्य मे जन हित का—
सत्य व शील का था पूर्ण संयोजन ॥३॥

(४)

पिता के सन्मुख पुत्र की मृत्यू नहीं होती थी,
हरनारी थी पतिव्रता वह कभी विधवा नहीं होती थी।
होता नहीं था विश्वासघात किसी के साथ—
देश प्रेम की गंगा वहती – तस्करी नहीं होती थी ॥४॥

(५)

दैहिक, दैविक व भौतिक ताप का था निष्कासन,
दारिद्र, अल्प मृत्यू, दुख व दर्द का था नहीं आसन।
कृतग्य, चतुर, परोपकारी, उदार व एक नारीव्रती—
विप्रचरण सेवी व वेदनिष्ठ थे सब राम के शासन ॥५॥

(६)

देश था समृद्धिशाली, धन धान्य से भरपूर,
प्रजा थी बल, बुद्धि, विद्या व अनुशासन में चुर।
विनयशील व आज्ञाकारी थे सब प्रजाजन–
निज वर्ण धर्म में प्रवीन – था नहीं कीसी को गरूर ॥६॥

(७)

लता तरू विटप फलने फूलने में नहीं अघाते थे,
ऋतुओं का था पूर्ण सहयोग सब के मनभाते थे ।
समन्दर देता था रत्नों का उपहार आकर तट पर–
चर अचर सब प्राणी भाग्यानुसार रत्न पाते थे ॥७॥

(८)

निज न्यूनतम पूर्ती करता संग्रह, हर वस्तु का उत्पादक,
शेष सब वस्तु, राज्य को दे देता बिना हिचकिचाहट ।
राज्य करता था शेष वस्तु का वितरण प्रजाजनों में–
होता नहीं था क्रय विक्रय किसी वस्तु का, संतुष्ठ थे सब ॥८॥

(९)

न चोर उचक्कों का था भय,
न जल व जलचर व अग्नि का था भय ।
न विषेले जन्तुओं का था भय,
न खुंख्वार जंगली पशुओं का था भय ॥
न महामारी व असाध्य रोगों का था भय,
प्रजा थी राम राज्य में अभय ॥९॥

(१०)

राम राज्य में शत्रुता का हुवा था लोप,
देश विदेश में सब ही थे मित्र ।
श्री राम ने अपने जीवन में प्रस्तुत किया था
जीवन के हर पहलू – आदर्शों का चित्र ॥

प्रजा थी धार्मिक, सदा तत्पर चुकाने में
पितृ ऋण, देश ऋण व देव ऋण-
राम राज्य के कोने कोने से महकता था
एकता व - सदा आदर्शों का इत्र ।।

"बेनी"

श्री राम प्रेमाष्टकम्

(श्री यामुनाचार्यजी अनुग्रहीत)

(१)

नील मेघ समान है वर्ण व कमल सदश विशाल हैं नयन,
अरुण है अधरों का रंग मानो बन्धुक पुष्णोंका किया चयन ।
सीताजी सहित विराजते हैं - धारण किये हैं धनुष बाण-
श्री रामजी का अति सुन्दर वेष है - मैं करूं सदा नमन ।।१।।

(२)

प्रौढ मेघ सम धीर गम्भीर, तुणिर धनु से करते टंकार,
आश्रितों के अभयदाता, ले हाथ में बाण भरते हुँकार ।
वेगवान पवन को करते मात, दानवराज रावण हन्ता-
सब तरह से मेरे सहायक हैं - लक्ष्मण सहित श्री रघुवीर ।।२।।

(३)

दशरथ के कुल दीपक, अतुल है जिन के बाहुबल का प्रताप,
दूर किये रावण के समस्त पाप, असुरों को दिया ताप ।
सब राजाओं को आनन्द प्रदान करते हैं श्री रघुनाथ-
अज्ञान व पाप रहित, मेरे सहायक हैं सदा श्री रघुबीर ।।३।।

(४)

कमल पत्र सदृश नील वर्ण, मेरी इष्ट वस्तुओं के दाता,
अकेले ही खर दूषण हन्ता – मुनिजन के रक्षक व त्राता।
अमोघ है रामनाम – करता सब जनों के पाप नाश–
राजा व देवताओं के सिर मोर, सहायक हैं श्री रघुबीर ।।४।।

(५)

अग्नि बन असुरों को भस्म करते, सूर्य बन विकसाते मानव,
असंख्य गुणों की सीमा, नील मेघ सम है शरीर स्याम।
मुनिश्वरों को जीतनेवाले हैं शमन व दमन में–
रघुकुल के अग्रणी सदा मेरे सहायक हैं श्री रघुबीर ।।५।।

(६)

लक्ष्मण सहित जिन्हों ने मुनि विश्वामित्र का यज्ञ रखाया,
पवन समान बाण समुह से नाश की मारीच की माया।
शिवजी के धनुष को खेल खेल में हैं तोड़नेवाले–
विकसाते सीताजी के नयन चन्द्र, सहायक हैं श्री रघुबीर ।।६।।

(७)

दबा रहे हैं हनुमन्त प्रभु श्री रघुनन्दन के चरन कमल,
अगस्त मुनि ने धारण कराया इन्द्र धनुष्य प्रभू के कर विमल।
असंख्य बाणों से परिपुर्ण है जिन का तुणिर, हैं रणधीर–
बाली को फूर्ती से मारा, मेरे सहायक हैं श्री रघुबीर ।।७।।

(८)

सुवर्ण सम गौर कान्ति वाली सीताजी के स्वामी,
ऋषियों व मनुष्यों में हैं श्रेष्ठ आदरणिय निराभिमानी।
वागीश्वरों के बन्दनिय व अपने भक्त समुदाय के बन्धु–
देव, वानर व मानवों के स्वामी, सहायक हैं श्री रघुबीर ।।८।।

अनुवादक "बेनी"

॥ श्री धनुर्धराय नमः ॥

मानस में गीता – परसराम गीता–१

अध्यात्मिक संशय व मोह की निवृत्ति के लिये उपदेश दिया गया तथा संशय निवृत्ति हुइ तो वह प्रसंग गीता कहा गया है। राम चरित मानस मे छ गीताएं मुख्य हैं।

परसराम गीता :– भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को १८ अध्याय गीता में उपदेश दिया तब उस का मोह नष्ट हुवा। मानस में परसरामजी का प्रसंग दोहा २६७ से २८४ तक है वह सात चौपाइयों में भगवान राम लक्ष्मण की अस्तुति हैं। इन का गर्व ही हरण नही हुवा अपितु मोह भी नष्ट हो गया। इसे परसराम गीता कहते हैं।

(बालकाण्ड दो. २६७ चौ १)

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयहु भृगुकुल कमल पतंगा॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लबा लुकाने॥
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा॥
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा॥
भृकुटि कुटिल नयन रिस राते। सहजहुं चितवन मनहु रिसाते॥
बृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेई माल मृगछाला॥
कटि मुनिवसन तून दुइ बाँधे। धनु सर कर कुठारु कल काँधें॥

दो० सात वेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनि तनु जनु वीर रसु आयउ जहँ सब भूप॥२६८॥

× × × ×

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होउ बलवाना॥
जौं रन हमहि पचारे कोऊ। लरहिं सुखेंन कालु किन होऊ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहिं पाँवट आना॥

कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुबंसी ।।
विप्रबंस कै असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुम्हही डेराइ ।।
सुनि मृदु गूढ वचन रघुपति के । उघरे पटल परसुधर मति के ।।
राम रमापति कर धनु लेहू । खैंचहु मिटे मोर संदेहू ।।
देत चाप आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन बिसमय भयऊ ।।

दो० जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु सयात ।।२८४।।

जय रघुबंस बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।।
– – – – – – – – – – – – – – –
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ।।

× × × ×

।। श्री रामभद्राय नमः ।।

मानस गीता (२)

लोकाभिरामं रण रंगधीरं । राजीव नेत्र रघुबंश ।।
कारूण्य पात्रं करूणा करंते । श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

प्रभु श्री राघवेन्द्र व सीताजी को जमी पर पत्तों की साथरी पर शयन करते देख निशाद–राज को विषाद उत्पन्न हुवा । कैकई ने सुख के अवसरपर श्री राम सीता को दुख दिया । श्री लक्ष्मणजी ने उसे उपदेश दिया ।

लक्ष्मण गीता–२ (विषाद योग)

दो– सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खाइ ।
सयन कीन्ह रघुबंश मनि पायपलोटत भाइ ।।८९।।

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी ।।
कछुक दूरि सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि बीरासन ।।
गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती । ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ।।
आप लखन पहिं बैठेउ जाई । कटि भाथी सर चाप चढाई ।।
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू । भयहु प्रेम बस हृदय विषादू ।।
तनु पुलकित लोचन बहई । बचन सप्रेम लखन सन कहई ।।
भूपति भवन सुभायँ सुहावा । सुरपति सदनु न पटतर पावा ।।
मनिमय रचित चारु चौबारे । जनु रति पति निज हाथ सँवारे ।।

दो.– सुचि सुविचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।
पलंग मंजु मनि दीप जहँ सब बिधि सकल सुपास ।।९०।।

विविध बसन उपधान तुराई । धीर फेन मृदु विसद सुहाई ।।
तहँ सिय राम सयन निसि करही । निज छबि रति मनोज मदु हरही ।।
ते सिय राम साथरीं सोए । श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोए ।।
मातु पिता परिजन पुरवासी । सखा सुसील दास अरु दासी ।।
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की नाईं । भई सोवत तेइ राम गोसाईं ।।
पिता जनक जग बिदित प्रभाऊ । ससुर सुरेस सखा रघुराऊ ।।
रामचंदु पति सो वेदेही । सोवत महि बिधि बामन केही ।।
सिय रघुबीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ।।

दो.– कैकय नंदिनि मंद मति कठिन कुटिलपन कीन्ह ।
जेहि रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुख दीन्ह ।।९१।।

भइ दिनकर कुल विटप कुठारी । कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ।।
भयउ विषादु निषादहि भारी । राम सिय महि सयन निहारी ।।
बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान बिराग भगति रस सानी ।।
काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सब भ्राता ।।
जोग बियोग भोग भल मंदा । हित अन हित मध्यम भ्रम फंदा ।।
जनमु मरनु जहिं लगि जग जालू । संपति विपति करमु अरु कालू ।।

धरनि धामु धनु पुर पुखारू । सरगु नरकु जँह लगि व्यवहारू ।।
देखिअ सुनिअ गुनि मन माहीं । मोह मूल परमारथु नाहीं ।।

दो.– सपने होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।
जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ।।९२।।

अस बिचारि नहि कीजिअ रोसू । काहुहि बादि न देइउ दोसू ।।
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा । देखिअ सपन अनेक प्रकारा ।।
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच बियोगी ।।
जानिअ तबहिं जीव जग जागा । जब सब बिषय बिलास बिरागा ।।
होइ बिवेकु मोह भ्रम भागा । तब रघुनाथ चरन अनुरागा ।।
सखा परम परमारथु एहू । मन क्रम बचन राम पद नेहू ।।
राम ब्रम्ह परमारथ रूपा । अबिगत अलख अनादि अनूपा ।।
सकल विकार रहित गत भेदा । कहि नित नेति निरूपहि वेदा ।।

दो.– भगत भूमि भुसुर सुरभि सुरहित लागि कृपाल ।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जगजाल ।।९३।।

X X X X

॥ श्री रामचन्द्राय नमः ॥

मानस गीता ३ – श्रीराम गीता

(अरण्य काण्ड दो० १३ चौ. ४)

प्रभु श्री राघवेन्द्र ने लक्ष्मण के प्रति कही ।

एक वार प्रभु सुख आसिना । लछमन वचन कहे छलहीना ।।
सुर नर मुनि सचराचर सांई । मैं पूछउँ निज प्रभु की नाई ।।
मोहिं समुझाइ कहहु सोइ देवा । सब तजि करौं चरन रज सेवा ।।
कहहु ग्यान बिराग अरु माया । कहहु सो भगति करहिं जेहिं दाया ।।

दो॰ इस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ।
जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ ॥१४॥

थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई। सुनहु तात मति मन चित्त लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया ॥
गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ। विद्या अपर अबिद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा। जा बस जीव पर भवकूपा ॥
एक रचइ जग गुन बस जाकें। प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ॥
ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं। देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥
कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥

दो॰ माया ईस न आपु कहुँ जान कहिअ सो जीव।
बंध मोच्छ प्रद सर्बपर माया प्रेरक सीव ॥१५॥

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना ॥
जातें बेगि द्रवउँ मैं भाई। सो मम भगति भगत सुखदाई ॥
सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना ॥
भगति तात अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला ॥
प्रथमहिं बिप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ॥
एही कर फल पुनि विषय विरागा। तव मम धर्म उपजा अनुरागा ॥
श्रवनादिक नव भक्ति दृढाहीं। मम लीला रति अति मन माहीं ॥
संत चरन पंकज अति प्रेमा। मन क्रम बचन भजन दृढ नेमा ॥
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा। सब मोहि कहँ जाने दृढ सेवा ॥
मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा ॥
काम आदि मद दंभ न जाकें। तात निरंतर बस मैं ताकें ॥

दो.– वचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम।
तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा विश्राम ॥१६॥

॥ श्री रघुनाथाय नमः ॥

मानस गीता ४ – बिभीषण गीता

(लंका काण्ड दो. ७८ से आगे)

रावन रथ में सवार होकर लड़ रहा था। प्रभु राघवेन्द्र महि पर खडे यहांतक पैरों में पगत्राण भी नहीं रावन का मुकाबिला कर रहे थे। यह देख कर बिभीषण को संशय हुवा कि एसी परिस्थिती में प्रभु की जीत कैसी होगी। प्रभु रामचन्द्र ने बिभीषण का मोह दूर किया।

चौ.– रावन रथी विरथ रघुबीरा। देखि बिभीषण भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि विधि जितब वीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका॥
वल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समान। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद विप्र गुर पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

दो.– महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ सुनहु सखा मतिधीर॥८०॥ (क)

सुनि प्रभु वचन बिभीषन हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥८०॥ (ख)

× × × ×

॥ श्री सीतारामाय नमः ॥

मानस गीता – ५ पुरजन गीता

(उत्तर काण्ड दो. ४२ से आगे)

एक बार रघुनाथ बोलाए। गुर द्विज पुरबासी सब आये ॥
बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन। बोले बचन भगत भव भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहउँ न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई। मम अनुसासन मानै जोई ॥
जौं अनीति कछु भाषौ भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ॥
बडे भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो० सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥४३॥

एहि तन कर फल बिषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
नर तनु पाइ बिषयँ मन देही। पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ॥
ताहि कबहुँ भल कहइ न कोई। गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
आकर चारि लच्छ चौरासी। जोनि भ्रमत यह जिब अविनासी ॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
कबहुँक करि करुना नर देही। देत ईस बिनु हेतु सनेही ॥
नर तनु भव वारिधि कहुँ बेरो। सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सदगुर दृढ नावा। दुलभ साज सुलभ करि पावा ॥

दो० जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥४४॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम बचन हृदयँ दृढ गहहू ।।
सुलभ सुखद मारग यह भाई । भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ।।
ग्यान अगम प्रतयूह अनेका । साधन कठिन न मन कहुँ टेका ।।
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ । भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ ।।
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । बिनु सत्संग न पावहिं प्रानी ।।
पुन्य पुंज बिन मिलहिं न संता । संतसंगति संसृति कर अंता ।।
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा । मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा ।।
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । जो तजि कपटु करइ द्विज सेवा ।।

दो० औरउ एक गुपुत मत सबहि कहउँ कर जोरि ।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि ।।४५।।

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ।।
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ।।
मोर दास कहाइ नर आसा । करइ तौ कहहु कहा बिसवासा ।।
बहुत कहउँ का कथा बढाई । एहि आचरन बस्य मैं भाई ।।
बैर न बिग्रह आस न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सब आसा ।।
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ।।
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तृन सम बिषय स्वर्ग अपवर्गा ।।
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई । दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ।।

दो० मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह ।
ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह ।।४६।।

सुनत सुधासम बचन राम के । गहे सबनि पद कृपा धाम के ।।

× × × ×

॥ श्री कौशलेन्द्राय नमः ॥

मानस गीता – ६ ज्ञान गीता व भक्ति गीता

(उत्तर काण्ड दो. ११४ (ख) चौ. १० आगे)

गरुडजी ने कागभुषुंडजी से प्रश्न किया–

ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥

काग भुषुंडजी ने उत्तर में भेद बताया । इसे ज्ञान गीता व भक्ति गीता कहते हैं ।

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ॥
नाथ मुनिस कहहिं अंतर । सावधान सोउ सुनु बिहंगबर ॥
ग्यान बिराग जोग बिग्याना । ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती । अबला अबल सहज जड़ जाती ॥

दो० पुरुष त्यागी सक नारिहि जो विरक्त मति धीर॥११५क॥
न तु कामी बिषया बस बिमुख जो पद रघुबीर ॥

सौ० सोउ मुनि ग्यान निधान मृग नयनी बिधु मुख निरखि ।
बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रकट ॥११५(ख)॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ । वेद पुरान संत मत भाषउँ ॥
मोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । नारिवर्ग जानइ सब कोऊ ॥
पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी । माया खलु नर्तकी बिचारी ॥
भगतिहि सानुकुल रघुराया । ताते तेहि डरपति अति माया ॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी । बसइ जासु कर सदा अबाधी ॥
तोहि बिलोकि माया सकुचाई । करि न सकइ कछु निज प्रभुताई ॥
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी । जार्चहि भगति सकल सुखखानी ॥

दो० यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेउ मोह न होइ ।।११६(क)।।

औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन ।
जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिछिन ।।११७(ख)।।

सुनहु तात यह अकथ कहानी । समुझत बनइ न जाइ बखानी ।।
ईस्वर अंस जीव अविनासी । चेतन अमल सहज सुख रासी ।।
सो माया बस भयउ गोसाईं । बँध्यो करि मरकट की नांईं ।।
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई । जदपि मृषा छूटत कठिनई ।।
जब ते जीव भयउ संसारी । छूट न ग्रंथी न होइ सुखारी ।।
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई । छूट न अधिक अधिक अरुझाई ।।
जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी । ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ।।
अस संजोग ईस जब करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ।।
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई । जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ।।
जप तप व्रत जम नियम अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ।।
तेइ तृन हरित चरै जब गाई । भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ।।
नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ।।
परम धर्ममय पय दुहि भाई । अवटै अनल अकाम बनाई ।।
तोष मरुत तब छमाँ जुड़ावै । धृति सम जावनु देइ जमावै ।।
मुदिताँ मथै बिचार मथानी । दम अधार रजु सत्य सुबानी ।।
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता । बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ।।

दो.- जोग अगिनि करि प्रकट तब कर्म सुभासुभ लाइ ।
बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ।।११७(क)।।

तब बिग्यानरूपिनी बुद्धि बिसद घृत पाइ ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ समता दिअटि बनाइ ।।११७(ख)।।

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास ते काढ़ि ।
तूल तुरीय संवारि पुनि बाती करे सुगाढ़ि ।।११७(ग)।।

सो० एहि त्रिधि लैसे दीप तेज रासि बिग्यानमय ।
जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ।।११७(ज)।।

सोहमस्मि रति वृत्ति अखंडा । दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा ।।
आत्म अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ।।
प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ।।
तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ।।
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई । तब यह कृतारथ होई ।।
छोरत ग्रंथि जानि खगराया । विघ्न, अनेक करइ तब माया ।।
रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ।।
काल बल छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ।।
होइ बुद्धि जो परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ।।
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बांधी । तो बहोरि सुर करहि उपाधी ।।
इंद्री द्वार झरोखा नाना । तँह तँह सुर बैठे करि थाना ।।
आवत देखहिं विषय बयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ।।
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तबहि दीप बिग्यान बुझाई ।।
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा ।।
इन्द्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । विषय भोग पर प्रीति सदाई ।।
विषय समीर वुद्धि कृत भोरी । तेहि बिधि दीप को बार बहोरी ।।

दो० तब फिर जीव बिबिध विधि पावइ संसृति कलेस ।
हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ।।११८(क)।।

कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक ।
होइ घुनाच्छर न्याय जौं खुनि प्रत्यूह अनेक ।।११८ (ख)

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेंस होइ नहिं वारा ।।
जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परम पद लहई ।।
अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ।।
राम भजत सोह मुकुति गोसाई । अन इच्छित आवइ बरिआई ।।

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोइ करै उपाई ।।
तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई ।।
अस बिचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ।।
भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नासा ।।
भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ।।
असि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ न जाहि सोहाई ।।

दो० सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि ।
भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ।।११९(क)।।

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य ।।११९(ख)।।

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि के प्रभुताई ।।
राम भगति चिंतामनि सुन्दर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ।।
परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती ।।
मोह दरिद्र निकट नहि आवा । लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ।।
प्रबल अविद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ।।
खल कामादि निकट नहिं जाहीं । बसइ भगति जाके उर माहीं ।।
गरल सुधासम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई ।।
ब्यापहिं मानस रोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ।।
राम भगति मनि उर बस जाकें । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ।।
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ।।
सो मनि जदपि प्रगट जग अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई ।।
सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ।।
पावन पर्बत बेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ।।
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ग्यान बिराग नयन उरगारी ।।
भाव सहित खोजइ जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी ।।
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ।।
राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा ।।

सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥
अस बिचारि जो कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

दो.– ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं।
कथा सुधा मथि काढहिं भगति मधुरता जाहिं ॥१२०(क)॥

विरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥१२०(ख)॥

× × × ×

केवट प्रसंग

(अयोध्या काण्ड दो. ९९ चो. ३)

चौ.– मागी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
एहि प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदम पखारन कहहू ॥

छंद– पद कमल धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पैं जब लगि न पाय पखारिहौं ॥
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सो.– सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन ॥१००॥

चौ.– कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेंहि तव नाव न जाई ॥
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू ॥

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहि नर भव सिंधु अपारा॥
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु वचन मोहँ मति करषी॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एही सम पुन्य पुंज कोउ नाहीं॥

दो.– पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥१००॥

× × × ×

राम नाम महिमा

राम नाम रत्न राशि, राम नाम अमृत है,
राम नाम स्वाँति बूंद, चातक के हिय की ॥१॥

राम ही संजीवन है, राम नाम कल्प तरव
राम नाम वसुधा, गिरीशजा के पिय की ॥२॥

राम नाम आनन्द, अखण्ड, ब्रम्हा, व्यापक है,
राम नाम शीशमणि, भव्य भक्ति तिय की ॥३॥

राम नाम कामधेनु, हार चारु चिन्तामणी,
" गंङगहरी " शुभ ज्योति, जीवन के जिय की ॥४॥

× × × ×

संकट में राम ही रक्षक है (कविता वली से)

जहाँ हित स्वामि, न संग सखा, वनिता, सुत, बंधु, न बापु न मैया।
काय गिरा मन के जन के अपराध सबै छाड छल छमैया॥
तुलसी तेहि काल कृपाल बिना दूजो कौन है दारुन दुख दमैया।
जहाँ सब संकट, दुर्घट सोचु तहाँ मेरो साहबु राखै रमैया॥

नवधा भगति

(अरण्य काण्ड दो ३४ से आगे)

चौ.– नवधा भगति कहउँ तोहि पाही। सावधान सुनु धरु मन माहीं ।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा ।।

दो.– गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ।।३५।।

चौ.– मंत्र जाप मम दृढ विस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा ।।
छठ दम सील बिरति बहू करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा ।।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोंते संत अधिक कर लेखा ।।
आठवँ जयालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा ।।
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हिय हरष न दीना ।।
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई ।।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ तोरें ।।
जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भई सोई ।।

× × × ×

सूरदासजी कृत श्रीमदभागवत नवम स्कंध का पदानुवाद

पद १ (राग बिलावल)

करतल – सोभित बान धनुहियाँ। टेर
खेलत फिरत कनकमय आँगन, पहिरे लाल पनहियाँ ।।
दसरथ – कौसिल्या कै आगैं, लसत सुतन की छहियाँ।
मानो चारि हंस सरबरतैं, बैठे आइ सदेहियाँ ।।
रघुकुल कुमुद-चंद चिंतामनि, प्रगटे भूतल महियाँ।
आये ओप दैन रघुकुलकौं, आनँद–निधि सब कहियाँ ।।
यह सुख तीनि लोक मैं नाहीं, जो पाये प्रभु पहियाँ।
सूरदास, हरि बोलि भक्तकौं, निरबाहत गहि बहियाँ ।।

पद २ (राग केदारो)

पूछत फिरत राम द्रुम – बेली । टेर
अहो वंधु, काहूँ अवलोकी, रहीं मग बधू अकेली ।।
अहो बिहंग, अहो पन्नग – नृप, या कंदर के राई ।
अब कैं मेरी बिपति मिटावौ, जानकि देहु बताई ।।
चंपक – पुहुप – बरन – तन – सुन्दर, मनौचित्र अवरेखी ।
हा रघुनाथ । निसाचर कैं सँग, अबै जात हौं देखी ।।
यह सुनि धावत धरनि चरन की प्रतिमा पथमैं पाई ।
नैन – नीर रघुनाथ सानि सो, सिव ज्यौं गात चढाई ।।
कहुँ हिय – हार, कहुँ कर कंकन, कहुँ नूपुर कहुँ चीरा ।
सूरदास, बन – बन अवलोकत, बिलख बदन रघुबीरा ।।

पद ३ राग मारू

मंदोदरी–
आयो रघुनाथ बली, सीख सुनौ मेरी । सीता ले जाइ मिलो बात रहे तेरी ।
तैं जो बुरो कर्म कियौ, सीता हरि ल्यायौ । घर बैठे बैर लियो कोपि राम आयौ ॥
चेतत क्यौं नहि मूढ, सुनि सुबात मेरी । अजहुँ नहिं सिंधु बँध्यौ, लंका है तेरी ।
सागर को पाट बाँधि पार उतरि आये । सेना को अंत नाहिं इतनो दल ल्याए ॥
रावण:–
देखि तिया कैसो बल, करितोहिं दिखराऊँ । रीछ कीस बस्य करौ
रामहिं गहि ल्याउँ ॥
मन्दोदरी:–
जानति हौं, वलि बाली सौं न छुटि पाई । तुम्हे कहा दोष दीजै,
काल अवधि आई ॥
बलि जब बहु जग्य कीय, इंद्र सुनि सकायौं । छल करि लइ छीनि
महि, वामन ह्वै छायौ ॥
हिरनकसिपु अति प्रचंड, ब्रम्हा वर पायौ । तब नृसिंह रूप धरयौ,
छिनन विलंब लायौ ॥
पाहन सौं बांधि सिंधु, लंका गढ घेरैं । मिलि बिभीषनै दुहाइ, सूर राम फेरैं ॥

पद ४ राग मारू

देखि रे। वह सारंगधर आयौ। टेर

सागर – तीर भीर वानर की, सिर पै छत्र तनायौ ।।
संख कुलाहल सुनियन लागे, लीला सिंधु बँधायौ ।।
सोवत कहा लंक गढ भीतर, अति सै कोप दिखायौ ।।
पदमु कोटि जिहिं सेना सुनियत, जंतु जो एक पठायौ ।।
सूरदास, हरि विमुख भये जे, तिनि केतिक सुख पायौ ।।

× × ×

पद ५ राग बिलावल (राम दर्शन)

देखन मंदिर आन चढी। टेक

रघुपति पूरनचंद विलोकत, मनु पुर – जलधि – तरंग बढी ।।
प्रिय दरसन – प्यारी अति आतुर, निसि वासर गुन ग्राम रढी ।
रही न लोक लाज मुख निरखत, सीस नाइ आसीस पढीं ।।
भई देह जो खेह करम – बस, जनु तट गंजा अनल दढी ।
सूरदास प्रभु दष्टि सुधानिधि, मानो फेरि बनाइ गढी ।।

× × ×

पद ६ – बिनती (राग आसावरी)

बिनती किहिं बिधि प्रभुहिं सुनाऊँ ?
महाराज रघुबीर धीर कौं, समय न कबहुँ पाऊँ ?
जाम रहत जामिनि के बीते, तिहिं औसर उठ धाऊँ ।
सकुच होत सुकुमार नींद में, कैसे प्रभुहिं जगाऊँ ।।
दिनकर -- किरनि – उदित ब्रम्हादिक – रुद्रादिक एक ठाऊँ ।
अगनित भींर अमर मुनि गन की, तिहिं तैं ठौर न पाऊँ ।।

उठत सभा दिन मधि सेनापति भीर देखि फिर आऊँ।
न्हात श्वात सुख करत साहिबी, कैसे करि अन खाऊँ।।
रजनी मुख आवत गुन गावत, नारद – तुबहँ नाऊँ।
तुमहि कहौ कृपानिधि रघुपति किहिं गिनती मैं आऊँ।।
एक उपाय करौ कमलापति, कहौ जु कहि समझाऊँ।
पतित (पावन) उधारन नाम सूर प्रभू, यह रूक्का पहुचाऊँ।।

X X X X

श्री राम बाली संवाद

(किष्किन्धा काण्ड दो. ७ से आगे)

चौ.– एक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ।।
कर परसा सुग्रीव सरीरा। तनुभा कुलिस गई सब पीरा।।
मेली कंठ सुमन कै माला। पठवा पुनि बल देइ बिसाला।।
पुनि नाना विधि भई लराई। विटप ओट देखहिं रघुराई।।

दो.– वहु छल बल सुग्रीव कर हियें हारा भय मानि।
मारा वालि राम तब हृदय माझ सर तानि।।८।।

चौ.– परा विकल महि सर के लागे। पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे।।
श्याम गात सिर जटा बनाएँ। अरुन नयन सर चाप चढाएँ।।
पुनि पुनि चित्तइ चरन चित्त दीन्हा। सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा।।
हृदयँ प्रीति मुख वचन कठोरा। वोला चित्तइ राम की ओरा।।
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि व्याध की नांई।।
मैं वैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा।।
अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुन सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई।।
मूढ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावय करसि न काना।।
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी।।

दो.– सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरि मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी अंत काल गति तोरि ।।९।।

चौ.– सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ।।
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ।।
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ।।
जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अबिनासी ।।
मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा ।।

छन्द– सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।
जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ।।
मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहेउ राखु सरीरहीं ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूर हीं ।।१।।

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ ।
जेहिं जोनि जन्मौं कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ।।
यह तनय मम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिऐ ।
गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिऐ ।।२।।

रामप्रेम ही सार है

सिय-राम-सरूपु अगाध अनूप बिलोचन-मीननको जलु है ।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिएँ पुनि रामहिको थलु है ।।
मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है ।
सबकी न कहै, तुलसीके मतें इतनो जग जीवनको फलु है ।।३७।।

श्रीराम और जानकीजीका अनुपम सौन्दर्य नेत्ररूपी मछलियोंके लिये अगाध जल है । कानोंमें श्रीरामकी कथा, मुखसे रामका नाम और हृदयमें रामजीका ही स्थान है । बुद्धि भी राममें लगी हुई है, रामहीतक गति है, रामहीसे प्रीति है और रामहीका बल है और सबकी बात तो नहीं कहता, परंतु तुलसीदासके मतमें तो जगत्‌में जीनेका फल यही है ।

रघुनन्दन राघव राघवेति

मरा मरा जप कर बने बालमीकि–ब्रह्माजी ने दिव्य दृष्टि ।
रचना करी श्री रामायण कीं – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।१।।

भगवत्ता व एश्वर्य से अलिप्त हैं रामायण के राम ।
परिपूर्ण है लीला माधुरी – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२।।

रामायण व अध्यात्म रामायण का तुलसीं ने किया समन्वय ।
सरजा श्रीरामचरित मानस – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।३।।

जनता का शौर्य जगाया – शैव वैष्णव द्वेष घटाया ।
पूर्णब्रह्म हैं तुलसी के राम – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४।।

सुन पृथिवी की पुकार – ब्रह्मा ने की स्तुति "जयजय सुरनायक" ।
हुवा आदेश देवताओं कों – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५।।

जन्म लो वानर ऋक्ष रूप – रावण विनाश नर वानर हाथ ।
मैं भी लूंगा मनुज अवतार – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।६।।

चैत्र शुक्ल पुनर्वसु नवमी तीथि – मध्यान्हें कर्कटे लग्ने ।
प्रगटे "कौशल्या हितकारी" – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।७।।

मनु शतरुपा वरदान चतुरभुज रुप प्रगट भये भगवान ।
बाल लीला करो अब प्रभुजी – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।८।।

राम जन्म अनन्द भयो, मास एक सूरज हुवा नहीं अस्त ।
दशरथ ने बाँटा अपार धन – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।९।।

चलत लटपटात, गिरत भूमि उठाय लेत दसरथ की रनियाँ ।
लाल, मिसरी मोदक लेउ खाय–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।१०।।

टुमक ठुमक चलत रामचंदर झनन झननन बाजत पैंजनिया ।
प्रफुल्लित हुए दसरथ व रनियाँ–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥११॥

माता कौशल्या जगावे – उठो लालजी अब भोर भयो है ।
करो कलेवू माखन रोटी – रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१२॥

रघुबीर खेलत रहे अँगना, हाथ से ले गयो माखन रोटी ।
काग के भाग्य को क्या कहिये–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१३॥

अरुण अधर, बोलत मधुर, मोहक नासिका सोहत लटकनियाँ ।
सुन्दर छबि पर सुन्दरता वारूँ–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१४॥

बाल्यकाल शिवजी अयोध्या आये संग लिये हनुमन्त ।
राम ने हठ किया वानर हित–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१५॥

पांच वर्ष करी राम सेवा–फिर बन सचिव सुग्रीव की प्रतिक्षा ।
हनुमान हैं सेवक राम के–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१६॥

मुनि वसिष्ठ के कहने से, यज्ञ रक्षा हित दीने राम लखन ।
मुनि विश्वामित्र महानिधि पाई–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१७॥

ताड़का सुबाहु को यमपूर भेजा– मारिच को सौ योजन फेंका ।
विश्वामित्र का यज्ञ रखाया–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१८॥

राम लखन को शिष्य बनाया–धनुर्विद्या में किया प्रवीन ।
प्रदान किये अमोघ अस्त्र – रघुनन्दन राघव राघवेति ॥१९॥

शिला रुप थी गौतम पत्नि, गुरु आयसु चरण रज दीन्हीं ।
अहल्या स्तुति कर पति समीपगई–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥२०॥

"मुनि श्राप जो दीना, भल कीन्हा, देखेउ हरिनयनन भवमोचन ।
पदकमल परागा रस अनुरागा"–रघुनन्दन राघव राघवेति ॥२१॥

विश्वामित्र के संग राम लखन को देख, विदेह भये विदेह विशेषी ।
मानो ब्रह्म का हुआ दरशन– रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२२।।

राम रूप माधुरी देख, मोहित हुए मिथिला के नर नारी ।
कृष्णावतार में पूरी होगी आस–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२३।।

फूल लेन राम लखन आये – थके नयन रघुपति छबि देखे ।
लोचन मग राम हि उर आनी–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२४।।

गिरिजा पूजन जननी पढाई, जय जय गिरिवर राज किशोरी ।
पूजहि मनकामना तुम्हारी – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२५।।

सब राजाओं ने मिल जोर आजमाया – चाप हिला नहीं ।
"जो जनतेउ बिनु भट भुइ भाई"–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२६।।

उठहुँ राम भँजहु चापा – मेटहु तात जनक परितापा ।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२७।।

सुनत युगल कर माल उठाई – सिय जय माल राम पहिनाई ।
बरसहि सुमन उर जय माल देखि–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२८।।

महेश चाप भंजन शोर सुन – परसा लिये आये परशराम ।
गरजे, शिव धनु किसने तोडा–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।२९।।

राम लखन हुवा नरम गरम संवाद–देत चाप आपहि चले गयेहु ।
"छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता"–रघुनन्दन राघव राघवेति :।३०।।

अयोध्यापुरी दूत पठाये, दसरथ वसिष्ठ बरात लाये ।
भरत शत्रुघ्न फूले नहिं समाये, रघुनन्दन राघव राघवेति ।।३१।।

राम की बरात झांकी ब्रम्हा शिव देखि नयन आठव दस ।
सो देखी इन्द्र नयन सहस्त्र, रघुनंदन राघव राघवेति ।।३२।।

उर्मिला, मांडवी व श्रुतकीर्ती, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न को दी ।
दहेज दिया अपार जनक ने–रघुनंदन राघव राघवेति ।।३३।।

करि विनय सिय रामहि समरपी, जोरि कर पुनि पुनि कहे ।
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह–रघुनंदन राघव राघवेति ।।३४।।

राम करो केहि भांति प्रसंसा, मुनि महेश मानस हंसा ।
व्यापकु ब्रह्म अलख अविनासी–रघुनंदन राघव राघवेति ।।३५।।

निरख निरख वधुओं की झाँकी, प्रसन्न हुई सब रनियाँ अपार
आनन्दित हुई सारी नगरी-रघुनन्दन राघव राघवेति ।।३६।।

गुरु वसिष्ठ ने राम युवराज पद अभिषेक मुहूरत निकाला ।
दशरथ व प्रजाजन के मन भाया–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।३७।।

कैकई ने दो वरदान मांगे – राम चौदह वर्ष वनवास ।
भरत को अयोध्याका राज्य-रघुनंदन राघव राघवेति ।।३८।।

राम सिय लखन वन सिधारे, अयोध्या नगरी भई अनाथ ।
राम ! हा राम ! दसरथ विलपति - रघुनन्दन राघव राघवेति ।।३९।।

निषाद से गले मिले–पत्ते बिछा महि पर राम सिय सोये ।
निषाद राज मन उपजा विषाद–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४०।।

सखा परम परमारथ एहू, मन वचन क्रम राम पर नेहू ।
कीन उपदेश लक्ष्मण गीता – रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४१।।

पग पखारि जल पानि करि, राम सिय लखन को गंगापार किया ।
भव पार की केवट ने की विनंति-रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४२।।

माय नाथ सुरसरी भरद्वाज आश्रम प्रयाग आये रघुनाथ ।
कंद मूल फल दे, करी स्तुति–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४३।।

आज सुफल तप तीरथ त्यागू, आज सुफल जोग बिरागू ।
निजपद सरसिज सहज सनेइ–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४४।।

मग दिखावन चार बटु संग ले–जमुना तट आये रघुबीर ।
उतरि नहाये जमुन जल स्याम–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४५।।

तेज पुंज लघु वयस तापसु आया, राम सप्रेम पुलकि उर लावा ।
राम रजाय सुं निषाद भवन गयहु–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४६।।

राम लखन सिय रूप निहारी, होहिं स्नेह विकल नरनारी ।
हम संग चलहिं जो आयसु होई–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४७।।

देखत वन सर सैल सुहाये – बाल्मीकि आश्रम प्रभु आये ।
बास करौं कुटि कहिउ सो ठाऊ–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४८।।

"श्रुति सेतु पालक राम स्वरुप तुम्हार–जगदीश माया जानकी ।
हरि शंभु न जानहिं मर्म तुम्हार"–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।४९।।

चित्रकूट गिरि करवु निवासू–तँह तुम्हर सब भांति सुपासू ।
राम बसउ चित्रकूट कुटि बनाई–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५०।।

शिव आदेश–वाणी, आहार व इन्द्रिय निग्रह जब तुम करिहो ।
सार्थक तव चित्रकूट बसिबो– रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५१।।

सुमंत बिना राम के लौटे, दशरथने त्याग दिये प्राण ।
अति गहन शोक डूबी नगरी–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५२।।

भरत ननिहाल से आये, कैकई को कटु वचन सुनाये ।
अंत्येष्टि की राजा दसरथ–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५३।।

आदेश गुरु वसिष्ठ – भरत राज करहु अयोध्या वर अनुसार ।
लौटाय देउ वर्ष चौदह बाद–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५४।।

रघुकुल रीति सदा चलि आई – जेठ पुत्र गद्दी पर बैंठत ।
चलहु वन राम को लौटायहु–रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५५।।
तापस रूप भरत चले, माताएं, गुरु, प्रजा व सेना साथ ।
भरद्वाज ने की राजसी पहुनाई-रघुनन्दन राघव राघवेति ।।५६।।क्रमशा
"बेनी"

राग भैरवी

मन पछितैहै अवसर बीते ।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, बचन अरु ही ते ।।१।।
सहसबाहु दसबदन आदि नृप, बचे न काल बलीते ।
हम हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते ।।२।।
सुत वनितादि जानि स्वारथरत, न करु नेह सबही ते ।
अंतहुँ तोहि तजैंगे पामर ! तू न तजै अवही ते ।।३।।
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते ।
बुझै न काम, आगिनि तुलसी कहुँ, विषय-भोग बहु, घी ते ।।४।।

भावार्थ– अरे मन! (मनुष्य-जन्मकी आयुका यह) सुअवसर बीत जानेपर तुझे पछताना पडेगा। इसलिये इस दुर्लभ मनुष्य-शरीरका पाकर कर्म, वचन और हृदयसे भगवान्के चरण-कमलोंका भजन कर ।।१।। सहस्र-वाहु और रावण आदि (महाप्रतापी) राजा भी वलवान् कालसे नहीं बच सके, उन्हें भी मरना पडा। जिन्होंने 'हम हम' करते हुए धन और धाम सँभाल-सँभालकर रखे थे, वे भी अन्त समय यहाँसे खाली हाथ ही चले गये (एक कौडी भी साथ न गयी) ।।२।। पुत्र, स्त्री आदिको स्वार्थी समझ इन सवसे प्रेम न कर। अरे अधम ! जव ये सब तुझे अन्त समयमें छोड ही देंगे, तो तू इन्हें अभीसे क्यों नहीं छोड देता ? (इनका मोह छोडकर अभीसे भगवान्में प्रेम क्यों नहीं करता ?) ।।३।। अरे मूर्ख ! (अज्ञान-निद्रासे) जाग, अपने स्वामी (श्रीरघुनाथजी) से प्रेम कर और हृदयसे (संसारिक विषयोंसे सुखकी) दुराशाको त्याग दे, (विषयोंमें सुख है ही नहीं, तव मिलेगा कहाँसे ?) हे तुलसीदास ! जैसे अग्नि वहुत-सा घी डालनेसे नही बुझती है ? (अधिक प्रज्वलित होती है) वैसे ही यह कामना भी ज्यों-ज्यों विषय मिलते हैं त्यों-ही-त्यों वढती जाती है। (यह तो सन्तोषरूपी जलसे ही वुझ सकती है) ।।४।।

रामायण महिमा श्रीमुरली मनोहर "मंजुल"

हमें निज धर्म पर चलना, बताती रोज रामायण ।
सदा शुभ आचरण करना, सिखाती रोज रामायण ।।१।।

जिन्हें संसार सागर से, उतरकर पार जाना है ।
उन्हें सुख से किनारे पर, लगाती रोज रामायण ।।२।।

कहीं छबि विष्णु की बाकी, कहीं शंकर की है झाँकी ।
हृदय आनंद झुले पर, झुलाती रोज रामायण ।।३।।

सरल कविता की कुञ्जों में, बना मन्दिर है हिन्दी का ।
जहां प्रभु प्रेम का दर्शन, कराती रोज रामायण ।।४।।

कभी वेदों के सागर में, कभी गीता की गङ्गा में ।
कभी रस 'विंदु' में मन को, डुबाती रोज रामायण ।।५।।

गरुड़जी के प्रश्न और उनके उत्तर

नाथ मोहि निज सेवक जानी । सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी ।।
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरां । सब ते दुर्लभ कवन सरीरा ।।
बड़ दुखकवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी ।।
संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ।।
कवन पुन्य श्रुति विदित बिसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ।।
मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई ।।
तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहउँ यह नीति ।।
नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ।।
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी ।।
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर । होहिं विषय रत मंद मंद तर ।।
काँच किरिच बदले ते लेहीं । कर तें डारि परस मनि देहीं ।।
नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ।।

श्री मानस सुमन वाटिका
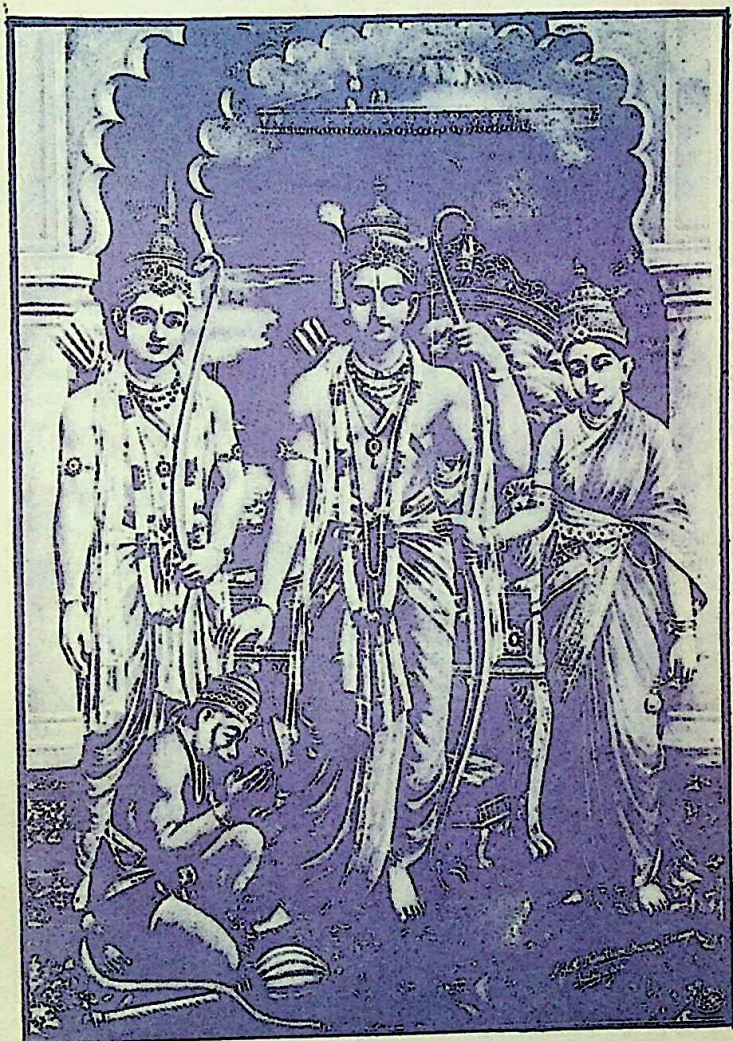
नील सरोरुह नील मणी।
नील नीर धर श्याम॥
लाज हि तन सोभा निरखि।
कोटि कोटि सतकाम॥

॥ श्री राम ॥
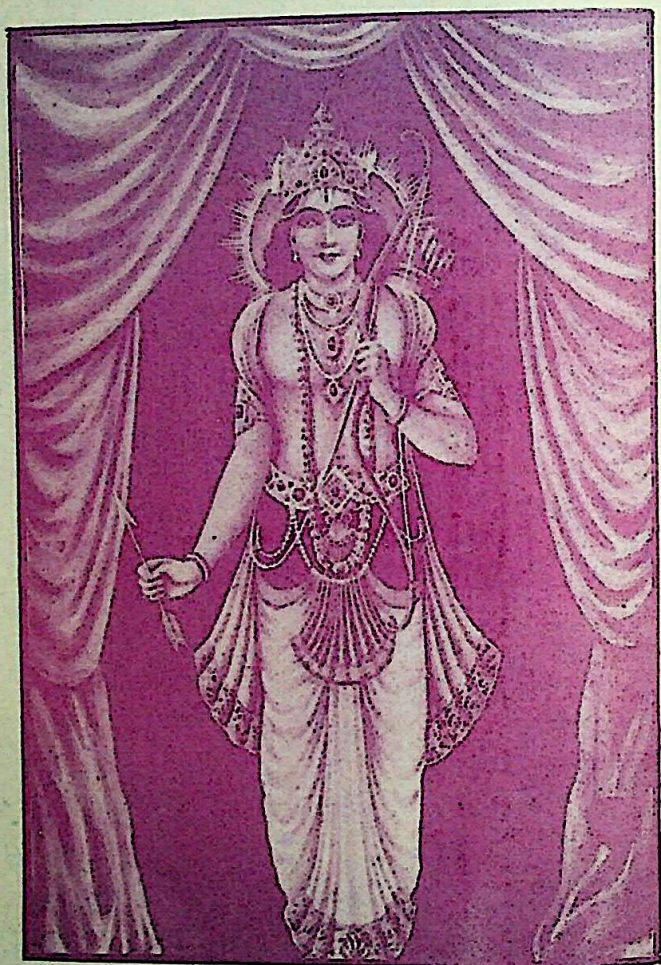
जड़ चेतन जग जीव जद सकल राम मय जानी।
बंदउ सब के पद कमल, सदा जोहि जुग पानि।
सिय राम मय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोहि जुग पानी ॥

॥ एकश्लोकी रामायण ॥

आदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनं,
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम् ।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरी दाहनम् ,
पश्चाद्रावण कुंभकर्ण हननं चैतद्धि रामायणम् ॥

●

रामाय रामभद्राय रामचंद्रायवेदसे ।रघुनाथाय सितायाःपतये नमः॥

●

॥ सम्पुट श्लोक ॥

आपदां हर्तारं दातारं सर्व संपदाम् ,
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

●

॥ पारायण श्लोक ॥

जयत्यतिबलो रामोलक्ष्मणश्च महाबलः ।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः ॥
दासोऽहं कौसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्ट कर्मणः॥
हनुमाञ्शत्रु सैन्यानां निहन्तामारुतात्मजः ॥

॥ ध्यान ॥

रक्ताम्भोजदलाभिराम नयनं पीताम्बरालङ्कृतं,
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्री सीतया शोभितम् ।
कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्भ्रातादिभिर्भावितं ,
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ॥

●

कौशल किशोरकी मनोज मुसकानि मञ्जु ,
जिय को हमारे तम तोम हरती रहे ।
शरद जुन्हाई सी कृपा की कोर छाई रहे ,
शीतल हमारे मन प्राण करती रहे ॥
जनक लली के विश्व वन्दित पदारविन्द ,
से सदैव अमृत की धार झरती रहे ।

प्यासे प्राण तृप्त हो आनन्द रस भाते रहे,
हिय में हमारे रस धार भरती रहे ॥

• श्री रामायण का पारायण •

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे बाल्मीकि कोकिलम् ॥१॥
बाल्मीकिर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन्राम कथानादं को न याति परां गतिम् ॥२॥
यः पिबन्सततं रामचरितामृतसागरम् ।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकलल्मषम् ॥३॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकी कृतराक्षसम्
रामायणंमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥४॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकी शोक नाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥५॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रिय बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं सिरसा नमामि ॥६॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलिलं, यं शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां, नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥७॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं, काञ्चनाद्रि कमनिय विग्रहम् ।
पारिजात तरुमूलवासिनं, भावयामि पवमाननन्दनम् ॥८॥
यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं, तत्र तत्र कृत मस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं, मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥९॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे ।
वेदः प्राचेत सादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥१०॥
तदुपगतसमाससन्धियोगं, सममधुरोपनतार्थवाक्यबद्धम् ।
रघुवरचरितं मुनिप्रणितं, दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥११॥
श्री राघवं दशरथात्मजमप्रमेयं, सितापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविंददलायताक्षं, रामं निशाचरँ विनाशकरं नमामि ॥१२॥
वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमेमहामण्डपे,
मध्येपुष्पक मासने मणिमये वीरासने सुस्थितम ।

अग्रेवाचयति प्रभञ्जन सुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं,
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामंभजे श्यामलम् ॥१३॥

●●●

अभिराम गुणाकर दाशरथे जगदेक धनुर्धर धीरमते ।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे ॥

अवनी तनया कमनीय वरं रजनीकर चारुमुखाम्बुरुहम ।
रजनीचर राजित मोमिहिरं महनीयमहं रघुराममये ॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं सुजनं वसुजातममोघशरम् ।
अपहायरघूद्वहमन्यमहं न कथंचय कञ्चन जातु भजे ॥

●

श्रीराम रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥
श्रीराम राम रामेति ये जपन्तिच सर्वदा ।
तेषा भुक्तिश्चमुक्तिश्च भवत्येव न संशयः ॥
धर्मात्मा सत्य सन्धश्च रामो दाशरथिर्यदि ।
पौरुषेच प्रतिद्वन्द्वः शरैनंजहि रावणम ॥
जयत्यति बलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः ।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः ॥
राम नाम परायेच घोरे कलियुगे द्विजोः ।
न एव कृत कृत्याश्च तेभ्यो नमो नमः ॥

●

असत्यम् शुचिं नीचम् पराधैक भाजनं ।
अल्प शक्तिम चैतन्यमनर्हं भृत्यकर्मणि ॥
दोषागारं दुरात्मानं मामेव परिचिंतयन् ।
मत्समर्पितं मित्येतन्नत्वमर्हस्युपेक्षितम् ॥
कौशल्या काल्पितं गेहे कानने लक्ष्मणार्पितम् ।
पंपाया शबरी दत्तं भरद्वाजार्पितच यत् ॥

●

मन व वाणी से हो अगोचर प्रभुजी तुम्हें सो सो प्रणाम ।
मन व वाणी से हो आधार प्रभुजी तुम्हें सो सो प्रणाम॥
प्रभुजी तुम्हारा वैभव है अपार तुम्हें सो सो प्रणाम ।
प्रभुजी तुम हो दया के आगार तुम्हें सो सो प्रणाम॥
अपराध किये मैंने कई हजार ।
डूब रहा हूं भव भंवर अब लो उबार॥
निरुपाय आया मैं तेरी शरण -
अपना लो कृपासिंधु तुम ही अति उदार॥

●●

॥ श्री रामाष्टोत्तर शतनामावलिः ॥

ॐ श्री रामाय नमः
ॐ रामभद्राय नमः
ॐ रामचंद्राय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ राजीवलोचनाय नमः
ॐ श्रीमते नमः
ॐ राजेंद्राय नमः
ॐ रघुपुंगवाय नमः
ॐ जानकीवल्लभाय नमः
ॐ जैत्राय नमः
ॐ जितामित्राय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ विश्वमित्रप्रियाय नमः
ॐ दान्ताय नमः
ॐ शरणत्राण तत्पराय नमः
ॐ वालिप्रमथनाय नमः
ॐ वाग्मिने नमः
ॐ सत्यवाचे नमः
ॐ सत्यविक्रमाय नमः
ॐ सत्यव्रताय नमः
ॐ व्रतधराय नमः
ॐ सदा हनुमदाश्रिताय नमः
ॐ कौसलेयाय नमः
ॐ खर ध्वंसिने नमः
ॐ विराध वधपंडिताय नमः
ॐ विभीषण परित्राणे नमः
ॐ हरकोदण्ड खण्डनाय नमः
ॐ सप्तताल प्रभेत्ते नमः
ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः
ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलाय नमः
ॐ ताटकान्तकाय नमः
ॐ वेदान्तसाराय नमः
ॐ वेदात्मने नमः
ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः
ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः
ॐ त्रिमूर्तये नमः
ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः

ॐ त्रिलोकात्मने नमः
ॐ पुण्यचरित्रकीर्तनाय नमः
ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
ॐ धन्विने नमः
ॐ दण्डकारण्यकर्तनाय नमः
ॐ अहल्याशापशमनाय नमः
ॐ पितृभक्ताय नमः
ॐ वरप्रदाय नमः
ॐ जितेन्द्रियाय नमः
ॐ जितक्रोधाय नमः
ॐ जितामित्राय नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः
ॐ ऋक्षवानरसंघातने नमः
ॐ चित्रकूट समाश्रयाय नमः
ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः
ॐ सुमित्रपुत्रसेविताय नमः
ॐ सर्वदेवाधिदेवाय नमः
ॐ मृतवानरजीवनाय नमः
ॐ मायामारीच हन्त्रे नमः
ॐ महादेवाय नमः
ॐ महाभुजाय नमः
ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः
ॐ सौम्याय नमः
ॐ ब्रह्मण्याय नमः
ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
ॐ महायोगिने नमः
ॐ महोदाराय नमः
ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः
ॐ सर्वपुण्यधिक फलाय नमः
ॐ स्मृतसर्वाघनाशाय नमः
ॐ आदिपुरुषाय नमः
ॐ परमपुरुषाय नमः
ॐ महापुरुषाय नमः
ॐ पुण्योदयाय नमः
ॐ दयासागाय नमः
ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
ॐ स्मित वदनाय नमः
ॐ मितभाषणे नमः
ॐ पूर्वभाषिणे नमः
ॐ राघवाय नमः
ॐ अनन्तगुणगंभिराय नमः
ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः
ॐ मायामानुषचारित्राय नमः
ॐ महादेवादिपूजिताय नमः
ॐ सेतुकृते नमः
ॐ जितवाराशये नमः
ॐ तीर्थमयाय नमः
ॐ हरये नमः
ॐ श्यामांगाय नमः
ॐ सुंदराय नमः
ॐ शूराय नमः
ॐ पीतवसने नमः
ॐ धनुर्धराय नमः
ॐ सर्वयज्ञादिपाय नमः
ॐ यज्विने नमः
ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
ॐ बिभीषण प्रतिष्ठात्रे नमः
ॐ पर्वापगुण वर्जिताय नमः

ॐ परमात्मने नमः
ॐ परब्रह्मणो नमः
ॐ सच्चिदानंदविग्रहाय नमः
ॐ परंज्योतिषे नमः
ॐ परधम्ने नमः
ॐ परकाशय नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ परेशाय नमः
ॐ पारगाय नमः
ॐ पाराय नमः
ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः
ॐ परस्मै नमः

।। आरती श्री सियावर की ।।

आरती करिये सियावर की, अवधपति रघुवर सुंदर की ।।टेर।।
जगत में लीला विस्तारी, कमलदल लोचन हितकारी
झूमती अलकें घुँघराली, मुकट छबि लगती है प्यारी।
मृदुल मुख जब मुस्काते हैं, छीन कर मन ले जाते हैं
नवल रघुवीर, हरे मन पीर, बड़े हैं धीर,
जयति जय करुणा सागर की ।।१।। अवधपति...
गले में हीरों का है हार, पीत पट ओढत राजदुलार
दृगन की चितवन पर बलिहार, दिया है हमने तन मन वारा
चरण है कोमल कमल विशाल, छबीले हैं दशरथ के लाल।।
सलोने श्याम, नवल अभिराम, पूरन सब काम,
सुरति है सकल चराचर की ।।२।। अवधपति....
अहिल्या गौतम की दारा, नाथ ने क्षण में निस्तारा,
जटायू, शबरी की तारा, नाथ केवट को उध्दारा।
शरणं कपि सुकंठ आये, विभिषण अभय दान पाये।।
मान, मद, त्याग, मोह से जाग, किया अनुराग,
कृपा है रघुवर धनुर्धर की ।।३।। अवधपति....
अधम जब खल बढ़ जाते हैं, नाथ तब जग में आते हैं,
विविध लीला दर्शाते हैं, धर्म की लाज रखाते हैं।
बसो नैनन में श्री रघुनाथ, मातुश्री जनक नंदिनी साथ।।
मनुज अवतार, लिये हर बार, प्रेम विस्तार
विनय है लक्ष्मण अनुचर की ।।४।। अवधपति....

●●

।। राम महिमा ।।

जड़चेतन जग जीव जद् सकल राममय जानि ।
बंदउ सब के पद् कमल, सदा जोरि जुग पानि ।।
सियराममय सब जग जानी
करउ प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

• श्री राममङ्गलाशासनम् •

(श्री वरवर मुनि स्वामीजी अनुग्रहित)

मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीयगुणाब्धाये ।
चक्रवर्तितनुजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ।।१।।
वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये ।
पुंसामोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम् ।।२।।
विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिला नगरी पतेः
भाग्यानां परिपाकाय भव्य रूपाय मङ्गलम् ।।३।।
पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सहसीतया ।
नन्दिताखिललोकाय रामभद्राय मङ्गलम् ।।४।।
त्यक्तसाकेतवासाय चित्रकूट विहारिणे ।
सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदयाय मङ्गलम् ।।५।।
सौमित्रिणा च जानक्या चाप बाण सिधारिणे ।
संसेव्याय सदा भक्तया स्वामिने मम मङ्गलम् ।।६।।
दण्डकारण्यवासाय खरदूषण शत्रवे ।
गृधराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम् ।।७।।
सादरं शबरीदत्तफलमूलाभिषिणे ।
सौलभ्य परिपूर्णाय सत्त्वोद्रिक्ताय मङ्गलम् ।।८।।
हनुमतसमवेताय हरीशाभिष्टदायिने ।
बालिप्रमथनायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ।।९।।
श्रीमते रघुवीराय सेतूल्लङ्घित सिंधवे ।
जित राक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम् ।।१०।।
बिभीषणकृते प्रीत्या लङ्काभीष्टप्रदायिने ।

सर्वलोकशरण्याय श्रीराघवाय मङ्गलम् ॥११॥
आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया ।
राजाधिराजराजाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥१२॥
ब्रह्मादिदेवसेव्याय ब्रह्मण्याय महात्मने ।
जानकीप्राणनाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥१३॥
श्री सौम्यजामातृमनेः कृपयास्मानुपेयुषे ।
गहते मम नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥१४॥
मङ्गलाशासन परैर्मदाचार्य पुरोगमैः
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥१५॥
रम्यजामातृ मुनिना मङ्गलाशासनं कृतम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः श्रीमान करोतु मङ्गलं सदा ॥१६॥

●

॥श्री राम वचनामृत ॥

दामिनि दमक रह न घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ॥
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसें। खल के बचन संत सह जैसें॥
छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई॥
भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी॥
समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा॥
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई। होइ अचल जिमि जिव हरि पाई॥
दो०- हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ।
जिमि पाखंड बाद ते गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥१४॥
दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई॥
नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ॥
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी॥
ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी॥
निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा॥
महावृष्टि चलि फूटि किआरीं। जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारीं॥
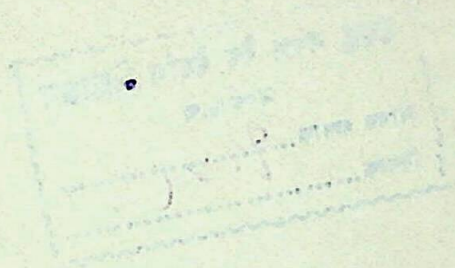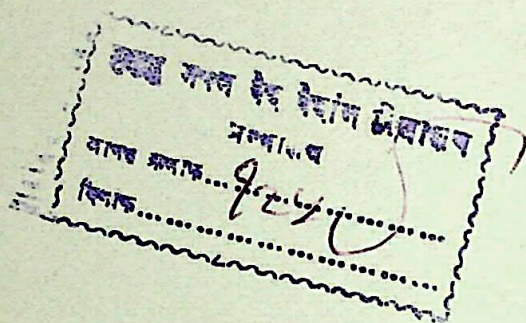
एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥
रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥

तुलसी न होता तो हिन्दी
अमर सुहागन न होती।
हिन्दी के माथे पर 'मानस'
की बिन्दी न होती ॥

• संकलन व प्रकाशन •
बेनीप्रसाद जाजोदिया

• आवरण सज्जा •
कलाकेंद्र ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस,
जयस्तंभ चौक, अमरावती